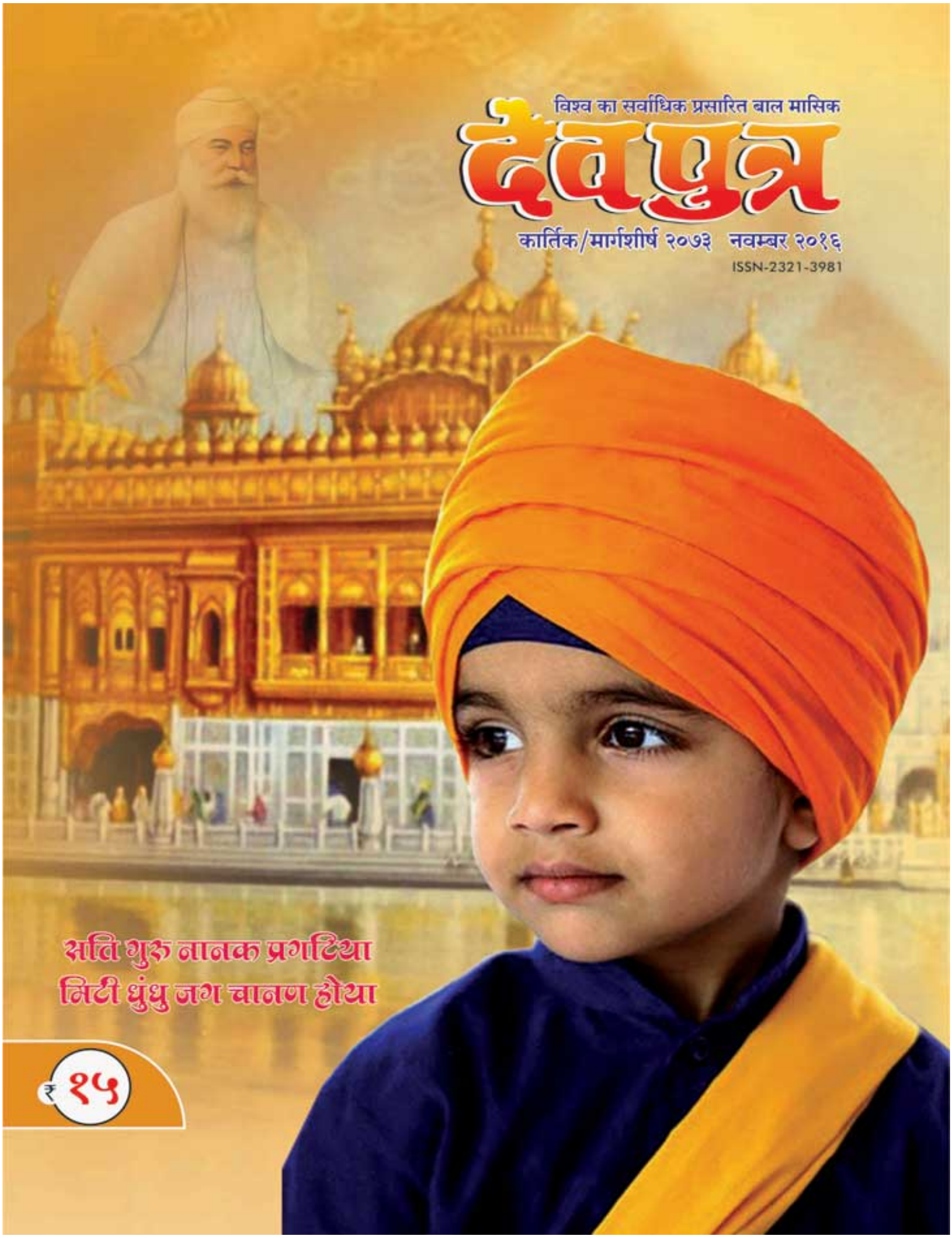
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
कार्तिक/मार्गशीर्ष २०७३ नवम्बर २०१६
ISSN-2321-3981
अति गुरु नानक प्रगटिया
मिटी धुंधु जग चानण होया
₹ १५

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

दृष्टि पब्लिकेशंस की अनूठी प्रस्तुतियाँ

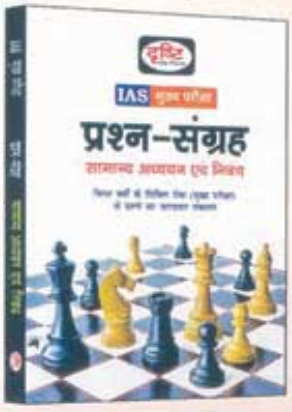

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें-
(+91) 8130392355

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

कार्तिक-मार्गशीर्ष २०७३ ▪ वर्ष ३७
नवम्बर २०१६ २०१६ ▪ अंक ५

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इस मास हम एक महापुरुष का स्मरण करेंगे जिसका अवतरण एक नए युग का शुभारम्भ माना जाता है। १५ नवम्बर सन् १४६९ को वर्तमान पाकिस्तान के शेखुपुरा जिले के तलवण्डी गांव में एक ऐसे बालक का जन्म हुआ जिसके विषय में किसी ने लिखा **'प्रकटे नानक जग तारन हित'** तो किसी ने लिखा कि **'खुद प्रकटे प्रभु नानक रूपा'**। और सिख इतिहास के मूर्धन्य लेखकों ने लिखा-

'सतिगुरु नानक प्रगटिया, मिटी धुंधु जग चानण होया' अर्थात् नानक का जन्म इतिहास की एक विशेष घटना है। शायद उस परम्परा की घटना है जिसका संकेत हमें गीता के 'परित्राणायं साधुनां.....' या रामचरित मानस की 'जब जब होई धरम की हानि.....' में मिलता है।

बाल्यकाल में पिता के दिए हुए पैसों से भूखे को भोजन कराकर उन्होंने **'सच्चा सौदा'** किया। किसान के खेत में नौकरी करते समय 'राम की चिरैया राम का ही खेत-खाओ चिरैया भरि भरि पेट' में संतोष सुख प्राप्त किया और युवावस्था में एक मोदी की दुकान में १२ पसेरी अनाज तौल कर १३वीं तौलने पर **'तेरा ही तेरा'** जबान पर ऐसा चढ़ा कि कि २०-२५ पसेरी हो जाने पर भी 'तेरा ही तेरा' 'तेरा ही तेरा' मुंह से निकलता रहा। आश्चर्य यह कि न तो चिड़िया के खेत चुग जाने पर किसान को कोई नुकसान हुआ और न इस अनाज व्यापारी को।

बाद में सब मोह माया से मुक्त होकर यह युवा देशाटन पर निकल गया और **'एक ओंकार'** की साधना में इस प्रकार लग गया कि फिर उसके लिए उससे बड़ा कोई काम बचा ही नहीं। धीरे-धीरे वे 'गुरू नानक' और 'नानक देव' बन गए और अपनी साधना से जो सिद्धि प्राप्त की उसने उसे महान और महानतम बना दिया। वे सिक्ख सम्प्रदाय के संस्थापक बने और उसके बाद एक गुरु परम्परा चल पड़ी।

मुगलों के अत्याचारों के प्रति उनके मन में इतना रोष था कि उनकी तुलना कसाई ही नहीं तो 'कुत्तों' तक से कर डाली थी। उनके लिए हिन्दु और मुसलमान समान थे। सभी की समानता, एकता और सामाजिक समरसता के वे कट्टर पोषक थे। **संगत और पंगत** का संदेश सबसे पहिले उन्होंने दिया था, जो आज तक सिक्ख समाज का आदर्श बना हुआ है। एक साथ बैठकर लंगर छकने के बाद में अपने या संगत के बर्तन साफ करना या अन्य सफाई करना और उसे 'सेवा मानना' यह है नानक देव की देन अन्त्योद।

'नीचा अंदर नीच जाति, नीचाहूं अति नीच।
नानक तिनके संग साथ बड़िया सिंउ क्या रीस।।'

का संदेश उस समय देकर शायद उन्होंने गांधी जी, अम्बेडकर जी और दीनदयाल जी के लिए भाव भूमि तैयार की थी।

आओ! प्रणाम करें इस युग पुरूष को युग प्रवर्तक को।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- जलेबी वाले बाबाजी - अरविन्द कुमार साहू ०५
- सपनों का गोला - डॉ. मंजरी शुक्ला १०
- फिरआए मेहमान - नरेन्द्र देवांगन १५
- धरती की पीड़ा - डॉ. नीलम राकेश १८
- बदलाव से लगाव - पूनम पाण्डे २३
- कोशिश रंग लाती है - पद्मा चौगाँवकर २८
- ऐसे आए पेड़ पौधे - मनोहर चमोली 'मनु' ३५
- कन्दरा - रघुराजसिंह 'कर्मयोगी' ४२
- कैसी रही - डॉ. शशि गोयल ४५

आलेख

- गुरु नानक देव - डॉ. राजेन्द्र पंजियार ०९

चित्रकथा

- राम का बाल दिवस - देवांशु वत्स ३०
- बाल दिवस का उपहार - देवांशु वत्स ४४

कविता

- हम बच्चे - डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा १२
- अच्छा बच्चा - डॉ. प्रभा पंत १६
- मानवता का वरदान - नरेन्द्र मण्डलोई 'माण्डलिक' २१
- बच्चा हिन्दुस्थान का - किंशुक किकी २५
- बबलू के सवाल - भगवती प्रसाद द्विवेदी २६
- खेल हवा का - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ३१
- नैना बिटिया - शादाब आलम ३७
- मेरा काम - विमला जोशी ३९
- कुछ माँ बाप इतराते हैं - डॉ. मधुसूदन चौबे ४०

स्तम्भ

- पुस्तक परिचय - ३२
- आपकी पाती - ३४
- दिमागी कसरत - ४१

बाल प्रस्तुति

- गिलहरी - यश पाराशर ०७
- झरना - सृष्टि चौरसिया ०८
- बस झूठ नहीं - समृद्धि श्रीवास्तव ३३
- पहेलियाँ - अमित थवाईत ३९
- चिड़िया - राधिका पाठक ४७

जलेबी वाले बाबा जी

कहानी :अरविन्द कुमार साहू

उनका उसकी नाम तो किसी को नहीं पता, पर सभी लोग उन्हें जलेबी वाले बाबा ही कहते थे। ७० वर्ष से अधिक की उम्र, लंबी छरहरी, गौर वर्ण काया, सन जैसी सफेद दाढ़ी, लंबे बाल और गेरुआ वस्त्र उनकी पहचान थे। वस्त्र क्या, एक धोती थी, जिसे आधा पहन कर आधा ओढे रहते थे। माथे पर अक्सर पीला चन्दन लगाते थे। अधिक विशेषताएं भी याद नहीं, पर इतना जरूर है कि बच्चों से बहुत प्यार करते थे। बच्चों के लिए उनकी कोठरी में थोड़ी सी जलेबियाँ एक दोने में अक्सर रखी रहती थी। भला बच्चों को उनसे और क्या चाहिए क्या था?

बाबाजी राम भजन तो खूब गा करके सुनाते थे, लेकिन संस्कृत के श्लोक पढ़ने में अटक जाते थे। आंखें बूढी हो चली थीं। चश्मा भी नहीं था। सो, इतना साफ नहीं दिखाई देता था कि छोटे अक्षर ठीक से पढ सके। पुराने जमाने वाली पढ़ाई की पहली या दूसरी कक्षा ही पास रहे होंगे, किन्तु उनकी समझ गजब की थी। मजाल थी कि कोई बच्चा श्लोक गलत पढ़कर सुना दे। जी हाँ, वे प्रायः हमारे विद्यालय के संस्कृत पढाने वाले शास्त्री जी से कहकर खाली कालांश में किसी मेधावी छात्र को अपनी कोठरी में बुलवा लेते और रामायण–महाभारत पढ़वा कर सुना करते। बदले में बच्चे को जलेबियाँ मिलती और बाबाजी का आशीर्वाद भी।

एक विशेषता उनमें और थी। अन्य साधुओं की तरह बाबाजी कभी भिक्षा नहीं मागते थे। है न आश्चर्य की बात। जीविकोपार्जन के लिए वे अपनी कोठरी के सामने जलेबियाँ का खोमचा लगाते थे। हमने भी जब उन्हें पहली बार साधु वेश में खोमचा लगाए देखा तो बड़ा आश्चर्य हुआ था। उनकी कोठरी और हमारा विद्यालय आमने

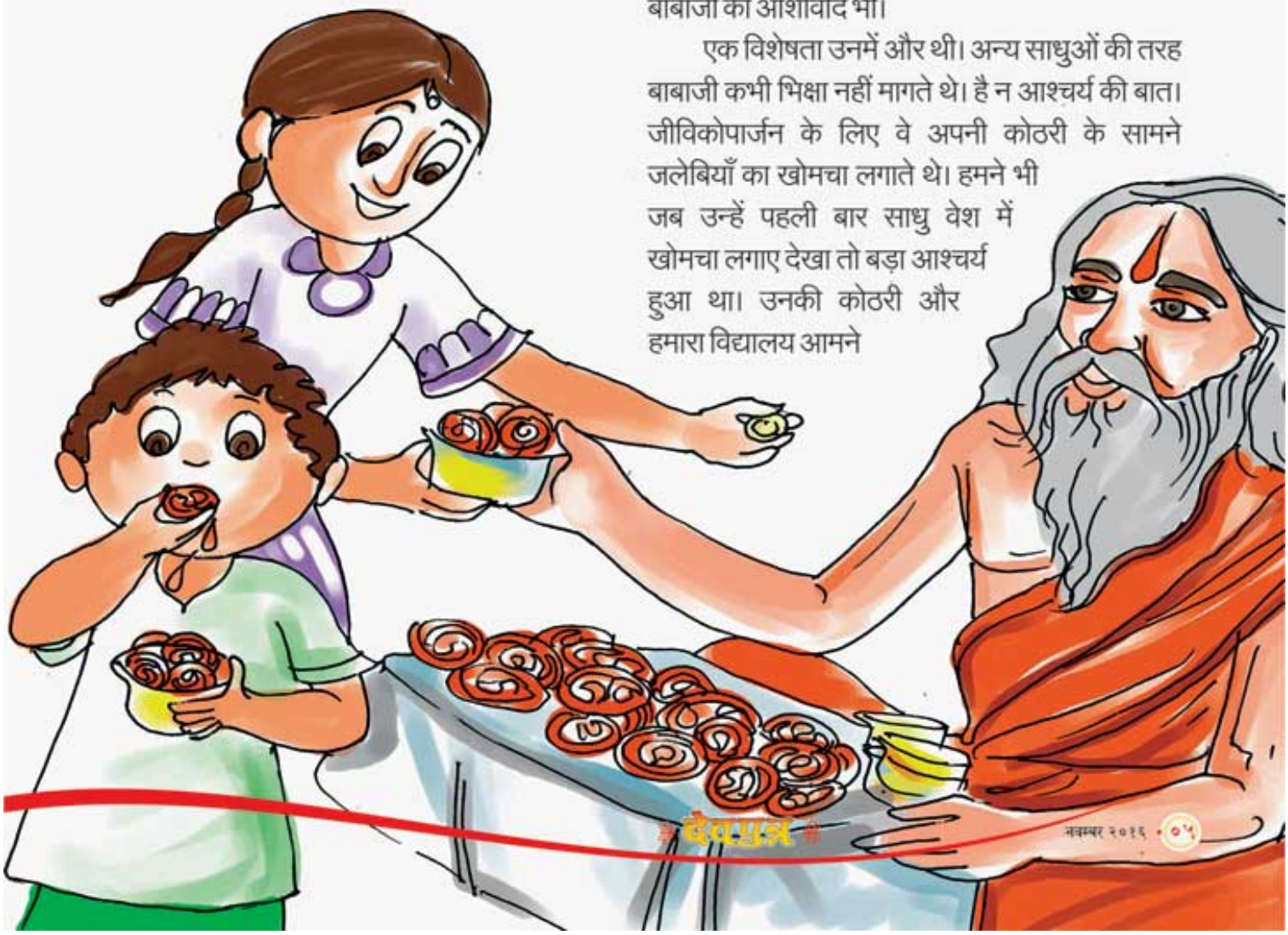

सामने था। बस, बीच में छोटी सी गली थी। बड़ों को दो पैसे की एक जलेबी किन्तु बच्चों को दो पैसे में दो जलेबी देते थे। एक ही पैसा हो तब भी दे देते थे। कुछ भी न हो तो तब भी, वापस न मिलने वाला उधार समझकर। बच्चा दुकान तक आ जाए तो खाली नहीं लौटता था। वे घाटे मुनाफे की भी ज्यादा चिन्ता नहीं करते थे।

बड़े खुद्दार थे बाबा जी। कहते थे, जब तक हाथ पाँव चल रहा है किसी से मांग कर क्यों खाएं? पहले तो सुबह जलेबियाँ बना कर सिर पर थाल रखे गई गांवों में फेरी भी लगा आते थे। लोग उनकी जलेबियों का इंतजार किया करते थे। लेकिन अब बुढ़ापा बढ़ने लगा तो दूर तक चलने फिरने से दिक्कत होने लगी। सो, फेरी वाला काम बंद कर दिया और कोठरी के सामने ही बिक्री करने लगे। जलेबियां अब भी अपने हाथ से ही बनाते थे। पूरी शुद्धता के साथ। ....और वे मरते दम तक इस नियम का पालन करते रहे। अपने लिए कभी किसी से कुछ नहीं मांगा।

ऐसा नहीं है कि बाबाजी की फिक्र करने वाला कोई नहीं था। उन्होंने तो शादी ही नहीं की थी। किन्तु उनके भतीजे का भरा पूरा परिवार बगल में ही रहता था। सब उनकी सेवा करना चाहते थे। खाने पीने की व्यवस्था करना चाहते थे। लेकिन बाबा जी को तो अपनी ही कमाई ज्यादा प्रिय थी। उल्टे भतीजे के परिवार में वे अक्सर जलेबियां भी पहुंचा आते थे। वैसे भी उनकी दुकान खूब चलती थी। कुछ उनके स्वभाव के कारण, तो कुछ जलेबियों की गुणवत्ता के कारण।

हमें याद है तब हम छटवीं कक्षा में पढते थे। बाबाजी कोठरी से थोड़ी ही दूर पर एक मंदिर बनावा रहे थे। मंदिर में खर्च ज्यादा था। सो, उसकी पूर्ति के लिए विद्यालय की छुट्टी के दिन वे दूर दराज तक चंदा मांगने निकल जाते थे। उन्होंने उसकी रसीद छपवा रखी थी और बकायदा पाई–पाई का हिसाब रखते थे। चंदे का पैसा उन्होंने अपने निजी प्रयोग में न लेने की कसम खा रखी थी। इसीलिए लोग उन्हें दिल खोलकर दान दिया करते थे। कुछ ही दिनों में उनका बाल गोपाल मंदिर बनकर तैयार

हो गया था। प्राण प्रतिष्ठा भी धूम धाम से हुई। बाबाजी बड़े प्रसन्न और संतुष्ट लग रहे थे।

एक दिन हमारे संस्कृत के अध्यापक शास्त्री जी ने उनसे कहा–''बाबा जी! बड़ा भव्य मंदिर बनवा दिया आपने। ईश्वर तो बहुत प्रसन्न होंगें आपसे।''

बाबा जी बोले पता नहीं, मैंने तो बस अपना कर्तव्य निभाया है।''

शास्त्री जी बोले– ''बाबा जी ! आप एक काम और कर सकते हैं, इससे भी अच्छा। ....और निश्चित मानिए कि आपके भगवान तो उस काम से और ज्यादा खुश होंगे।

''भला वह क्या–''बाबा जी को बात समझ में न आई।

''अरे आप बच्चों से बहुत प्यार करते हैं न?''

''हॉ, बिल्कुल। अखिर बच्चे भी तो भगवान का ही रूप होते हैं। मेरे बाल गोपाल की तरह।''

''तो बाबाजी, एक मंदिर बच्चों के लिए भी बनवा दीजिए न। बहुत पुण्य मिलेगा।''

''बच्चों के लिए अलग से मंदिर? भला वह कैसे? थोड़ा खुलकर समझाओ न।'' बाबा जी को शास्त्री जी पहेली बिलकुल भी समझ में नहीं आई थी।

''ठीक है बाबा जी। मैं समझाता हूँ। देखिए, भगवान को रहने के लिए मंदिर की जरूरत थी, आपने बनवा दिया।''

''हाँ''–बाबा जी उत्सुकता से बोले।

''बच्चे भी तो भगवान का रूप हैं न? इनके लिए भी तो मंदिर चाहिए।''

''भला इन्हें क्यों? ये तो अपने माता–पिता के साथ घर में रहते ही हैं।''

''घर में रहते हैं। लेकिन यहाँ तो इनका मंदिर नहीं है न।''

''कहना क्या चाहते हैं आप? स्पष्ट तो कीजिए''– ''बाबा जी आश्चर्य से बोले। उनकी जिज्ञासा चरम पर पहुँच गई थी।

शास्त्री ने बात को सीधे करके कहा– बाबाजी। बच्चों का मंदिर तो उनका विद्यालय होता है। देखिए कितनी दूर–दूर से बच्चे यहां पढने आते हैं। वे घर से सुबह छह बजे निकलते हैं और शाम ढले छह बजे तक ही वापस पहुँच पाते हैं। दोपहर में पेट भर भोजन भी सुकून से नहीं मिल पाता। भला आपकी दो जलेबियों से उनका क्या होता होगा? वह भी तो बच्चे रोज खरीद नहीं पाते होंगे। आने जाने में ही थककर चूर हो जाते हैं। न खेलने का समय मिलता है, न गृहकार्य करने का। इस भागमभाग में उनका ध्यान एकाग्र नहीं हो पाता। वे कैसे स्वस्थ और मेधावी बनेंगे?''

बाबा जी जैसी गहरी नींद से जाग उठे हो। बोले– ''अरे यह तो मैंने कभी सोचा ही नहीं।''

शास्त्री जी चहक कर बोले–''तो अब सोचिए बाबा जी, आप यह कार्य आसानी से कर सकते हैं। यहाँ एक सुविधाजनक छात्रावास बनवा दीजिए या दूरदराज के गांवों में एकाध ऐसा ही नया विद्या मंदिर बनवा दीजिए। लोग आप पर विश्वास करते है। चंदा भी पर्याप्त मिल जाएगा।''

बाबाजी निहाल हो उठे– ''शास्त्री जी! आपने मेरी आँखें खोल दी। प्रभु मंदिर से पहले ही विद्या मंदिर बनाने चाहिए। शुभ कार्य में देरी नहीं होगी। मैं आज से ही तैयारी

बाल प्रस्तुति

गिलहरी

कविता : यश पाराशर

एक गिलहारी रहे अकेली,
चिड़ियों को दोस्त, बनाती है।
मिलकर खाने की शिक्षा वह
हम सबको देकर जाती।।

● भाण्डेर (म.प्र.)

शुरु कर देता हूँ। पहले यहाँ छात्रावास बनेगा।''

बस, इसके बाद रसीदें छप गई और बाबा जी तन–मन से जुट गए। पैसा आने लगा। ग्राम प्रधान ने भूमि की व्यवस्था कर दी। पहले शिलान्यास हुआ। फिर भवन भी बनने लगा। बाबा जी की व्यवस्था से सारा काम सुचारू रूप से चलता रहा। उनकी जलेबियाँ भी बनती और बिकती रही। किन्तु बाबा जी की वृद्धावस्था बढ़ती जा रही थी। उनका शरीर बेहद कमजोर होता जा रहा था।

समय चक्र देखिए। जिस दिन छात्रावास का उद्घाटन था, उसी दिन बाबा जी बीमार पड़ गए। उन्हें सहारा देकर लाया गया। किसी तरह उनके हाथों से ही भवन का लोकार्पण हुआ। अपने आशीर्वचन में इतना ही बोले–''रात को मेरे सपने में प्रभु बालगोपाल आए थे। उनके साथ पूरी बाल मंडली थी। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मंडली के गोपालों के चेहरे इस विद्यालय के छात्रों से एकदम मिलते जुलते थे। प्रभु बहुत खुश थे। मुझसे कहा कि वत्स तुम्हारी तपस्या पूरी हुई। मैं तो उनके दर्शन भर से निहाल हो गया। मुझे इस जीवन का सर्वस्व मिल गया। अब प्राणों का बिलकुल भी मोह नहीं है।''

....और बस, बोलते–बोलते ही बाबा जी चल बसे। उनकी देह निर्जीव हो गई। बड़ी श्रद्धा के साथ उनका अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ। विद्यालय परिवार और सारा नगर शोकाकुल था। बाद में जब बाबाजी की कोठरी की सफाई की गई तो उनके सिरहाने हजारों रुपए रखे मिले। साथ में एक पत्र भी था– ''मुझे पता है कि मेरे लिए मेरे प्रभु बाल गोपाल का बुलाया कभी भी आ सकता है। मैंने जलेबियाँ बेचकर कुछ लाभ का धन बचाया है। इससे मैं छात्रावास के बच्चों के लिए एक भोजनालय की व्यवस्था करवाना चाहता हूँ। पता नहीं प्रभु इतना अतिरिक्त समय देंगे या नहीं।''

यह बाबाजी की अंतिम इच्छा थी। लोगों ने इसे सिर माथे पर रखा। छात्रावास में एक अच्छी और सस्ते भोजन की व्यवस्था भी हो गई। बाबा जी के धन में और चंदा लगाकर विशाल रकम बना दी गई। ट्रस्ट बनाकर राशि सुरक्षित कर दी गई। आज भी विद्यालय के बच्चों को वहाँ की भोजनालय में प्रतीकात्मक रूप में एक जलेबी एक पैसे की ही मिलती है। चूंकि मंहगाई बहुत बढ़ गई है और छोटे सिक्के भी अब चलन में नहीं रहे। इसलिए एक रुपया जमा करना पड़ता हैं। टोकन में एक तरफ एक पैसा का पुराना सिक्का और दूसरी और बाबा जी का फोटो छपा रहता है। एक टोकन पर बच्चों को दो और बड़ों को एक जलेबी दी जाती है। ....और बाबा जी की पुण्यतिथि पर सभी को प्रसाद के रूप में मुफ्त में भरपेट जलेबियाँ बांटी जाती है। जलेबी वाले बाबा जी को आज तक कोई भूल नहीं सका है।

● ऊंचाहार (उ.प्र.)

बाल प्रस्तुति

झरना

कविता : सृष्टि चौरसिया

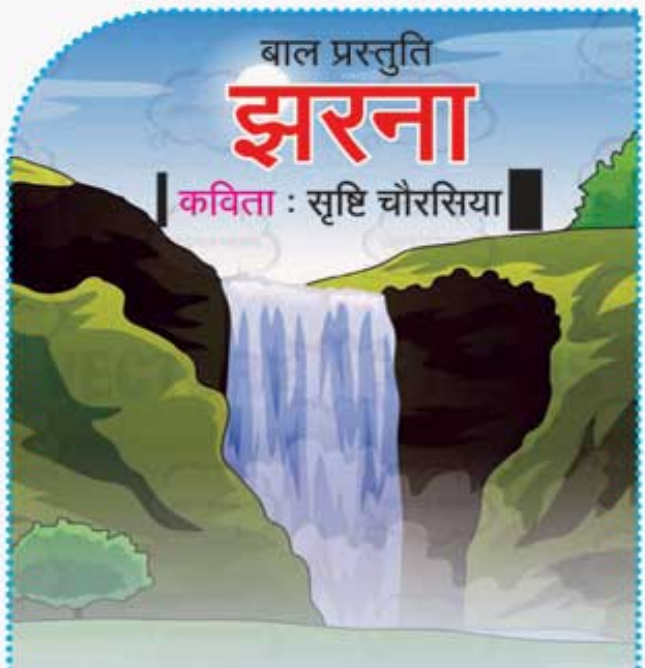

मैं झरना हूँ झर–झर झरता
हर प्यासे का स्वागत करता
ऊपर से नीचे गिरकर भी
खूब जोर से मैं तो हँसता

●सिवनी (म.प्र.)

कार्तिक पूर्णिमा : गुरु नानक जयंती

गुरु नानक देव

आलेख : डॉ. राजेन्द्र पंजियार

गुरु नानक देव सिख धर्म के मूल संस्थापक थे। उनका जन्म एक खत्री परिवार में १४६९ ई. में लाहौर से लगभग अड़तालीस किलोमीटर दूर तलवंडी नामक गांव में हुआ था, जो नानकाना नाम से प्रसिद्ध है। बचपन में ही ये एकान्त में मौन रहकर ध्यान में डूबे रहते थे। इन्हें पिता ने बीस रुपए रोजगार के लिए दिए, जिसे इन्होंने अवसर पाकर साधु फकीर में ही बांट दिए। दिन में अपना काम कर रात में भजन बनाकर बहुत भावपूर्वक गाया करते थे। तलवण्डी का ही मरदाना नामक इनका एक साथी था, जो इनके साथ रबाब (बाजा) बजाया करता था। इन बातों से नाराज पिता ने इन्हें नौकरी के लिए अपने दामाद के पास भेज दिया। उनकी मदद से इन्हें मोदी खाने में नौकरी मिल गई। जहाँ ये आटा तोला करते थे। एक दिन आंटा तोलते हुए तेरह की गिनती के बाद भावेश इन्हें नौकरी मिल गयी, में तेरा तेरा कहते हुए बहुत सा आटा तौल दिया इस पर मालिक ने नाराज होकर इन्हें नौकरी से निकाल दिया। तब से ये मरदाना को साथ लिए, देश की सभी दिशाओं में बहुत दूर-दूर तक भ्रमण करते हुए, साधु फकीरों के साथ संत्संग करते तथा अपने लिखे पद भाव में डूबकर गाते रहते थे। गाते हुए ये ईश्वर में ऐसा लीन हो जाते कि इन्हें कोई सुधि नहीं रह जाती।

नानक देव जी जात-पात का कोई भेदभव नहीं मानते थे। नौकरी के समय इनका विवाह भी कर दिया गया था, जिससे इन्हें श्रीचंद और लखीमदास दो पुत्र भी हुए, पर इनकी जरा भी आसक्ति परिवार से नहीं रह गई। कहा जाता है वे भ्रमण करते मुसलमानों का पवित्र स्थान मक्का भी गए थे तब एक सिद्ध पुरूष के रूप में पूरे देश में प्रसिद्ध हो चुके थे मूर्ति पूजा के विरोधी थे और एक ईश्वर को मानते थे, जो सर्वव्यापक हैं। ईश्वर के नाम स्मरण में इनका गहरा विश्वास था। इनके सहृदय में मानव मात्र के प्रति अपार प्रेम और करुणा थी। इनकी बानियां पदों के रूप में सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ, **गुरु ग्रंथ साहब** में संकलित है। सन १५८८ ई में अपने अंत समय में करतारपुर आकर परिजनों के बीच अपना शरीर छोड़ दिया। ये एक महान संत के रूप में भक्तों के हृदय में बस रहे हैं।

• भागलपुर (बिहार)

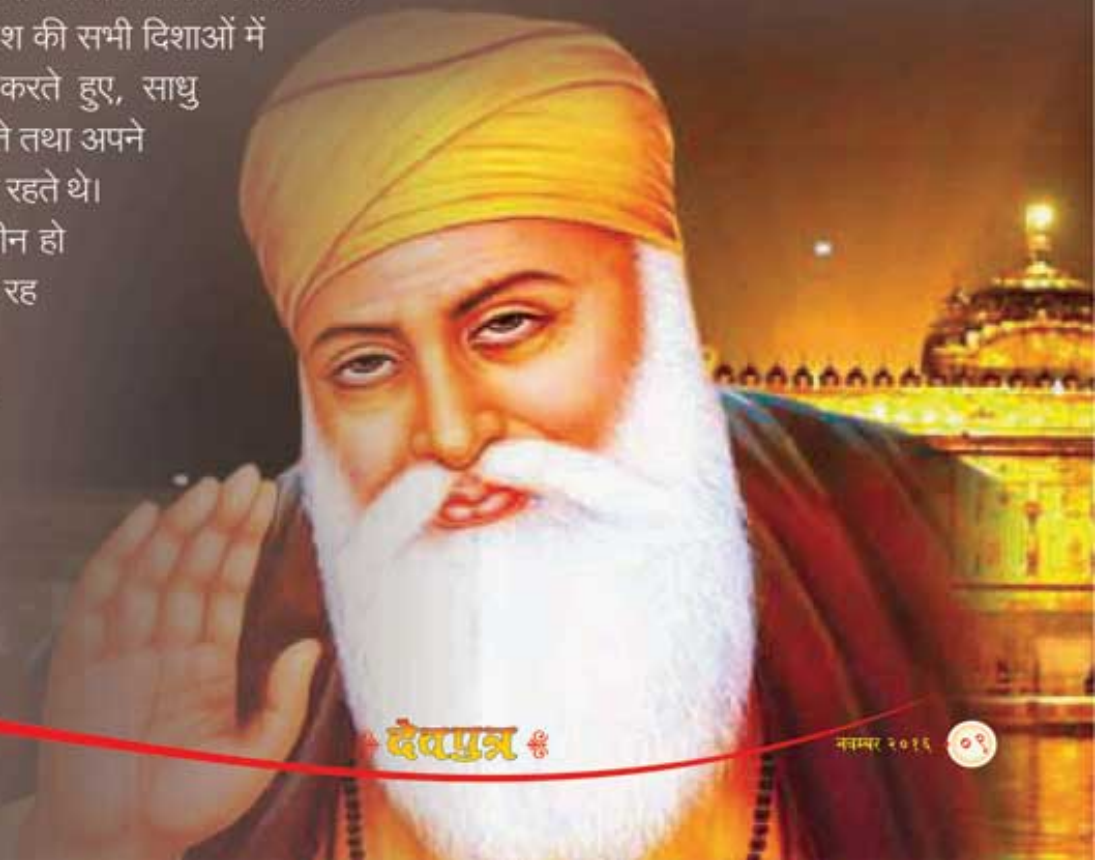

सपनों का गोला

कहानी : डॉ. मंजरी शुक्ला

नीली घाटी के पीछे का हरा भरा मैदान में चूहों की बस्ती थी।

चीची चूहा उनका मुखिया था जो बड़ा ही बहादुर और समझदार था और सबकी मदद करने में सबसे आगे रहता था। रोज की तरह आज भी वह अपने मित्रों के साथ नदी के किनारे लम्बी हरी घास में लुका–छिपी का खेल खेल रहा था कि अचानक उसका संतुलन बिगड़ गया और वह छपाक की आवाज के साथ नदी में जा गिरा। उसने घबराते हुए मदद के लिए आसपास देखा, पर सब कहीं न कहीं छुपे हुए थे, इसलिए उसे कोई नहीं दिखा। तभीउसके पास से एक नाव गुजरी। चीची जान बचाने के लिए हिम्मत करते हुए किसी तरह से उस में चढ़ गया।

नाव में एक दो आदमी बैठे थे जो शायद उस राज्य के राजा से मिलने जा रहे थे और साथ में आम से भरा एक झोला राजा को उपहार देने के लिए जा रहे थे।

ची ची जल्दी से उस झोले के अंदर कूद गया और बिना हिले डुले दम साधे बैठा रहा।

जब नाव किनारे पर लग गई तो वे दोनों आदमी राजा के महल की ओर चल पड़े।

चीची अपने घर और मित्रों की याद करते हुए सोच रहा था कि पता नहीं वो उन लोगों से अब कभी भी मिल भी पाएगा या नहीं।

तभी अचानक द्वारपाल ने एक आदमी से थैला हाथ में लेते हुए जाँच पड़ताल के लिए जमीन पर उलट दिया। आमों के बीच से निकलकर चीची तेजी से एक ओर भागा।

सभी आमों को उठाने में लग गए और चीची की तरफ किसी ने भी ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

चीची जिस तरफ से राजमहल के अंदर घुसा, वे महल का रसोईघर था।

ढेर सारे पकवाने देखकर उसकी भूख और बढ गई और वो जमीन पर पड़ी पूड़ी के टुकड़े को आराम से बैठकर कुतरने लगा।

इस साहसिक यात्रा के बाद चीची के अंदर थोड़ी हिम्मत आ चुकी थी और वह महल रसोई घर से बाहर निकलकर दूसरे कमरे में पहुंचा जहाँ पर राजा परेशान इधर–उधर टहल रहा था। और उसके मंत्री भी परेशान खड़े हुए थे।

चीची राजा को गौर से देखने लगा। तभी राजा बोला–''मुझे समझ में नहीं आ रहा हैं कि आखिर हमारे राज्य में हर समय सिर्फ दिन ही क्यों रहता हैं, रात क्यों नहीं आती?''

ये सुनकर चीची आश्चर्य से इधर उधर देखने

लगा। खिड़की के बाहर से झीने परदे की ओट से सूरज की रोशनी छनछनकर अंदर आ रही थी।

तभी महामंत्री धीरे से बोले– ''महाराज। अब तो रात का पता नहीं लगने के कारण सब जागकर चिड़चिड़े हो गए हैं।''

चीची को राजा की हालत देखकर बहुत दुख हुआ और वो राजा के पास पहुँचा।

महामंत्री चूहे को देखकर भड़क उठा और वह उसे उठकर फेंकने ही वाला था कि राजा बोला– ''रुको'' और उसने चीची को बड़ी ही सावधानी से अपनी हथेली पर उठा लिया।

चीची बोला–''महाराज, आपके सपनों का गोला तो हमारी बस्ती में पड़ा हैं इसलिए यहाँ रात नहीं हो रही।''

''सपनों का गोला'?''

''हाँ महाराज...! बहुत दिन पहले आपके महामंत्री ने सपनों के धागों को ऊन के गोले की तरह लपेटकर हमारी घाटी में फेंक दिया था तभी से हमारी घाटी में खुशहाली छा गई है और हम सब सोते समय सतरंगी सपने देखते हैं।''

राजा ने बड़े ही प्यार से चीची के ऊपर हाथ फेरते हुए पूछा–'' तो तुम मुझे वे सपने देने को क्यों तैयार हो गए?''

''महाराज, हम खुश होना चाहते है पर आपकी खुशियाँ छीन कर नहीं...''

ये सुनकर राजा मुस्कुरा दिया और बोला– ''तुम मेरे सिपाहियों के साथ जाकर सपनों के गोले को अपने संगी साथियों के साथ ले आओ...अब से तुम सब हमेशा मेरे साथ रहोगे।''

राजा ने महामंत्री की तरफ देखकर गुस्से से पूछा–''और तुम्हारे साथ क्या किया जाए?''

महामंत्री तोपा पहले ही डर के मारे काँप रहा था राजा का गुस्सा देखकर उसकी रही सही हिम्मत भी जवाब दे गई। उसकी आँखों से दो बूँद आँसू गिर पड़े।

चीची ये देखकर बहुत दुखी हो गया और बोला–''महाराज, इन्हे माफ कर दीजिए। अगर ये सपनों का गोला मेरी घाटी में ना फेंकते तो मैं हमेशा के लिए आपके पास आकर कैसे रहता?''

ये सुनकर राजा जोरों से हँस पड़ा और उसने महामंत्र को गले से लगा लिया।

महामंत्री राजा की सज्जनता देखकर नतमस्तक हो गया और चीची के साथ चल पड़ा सपने के गोले को वापस लाने के लिए।

● **बहोली (हरियाणा)**

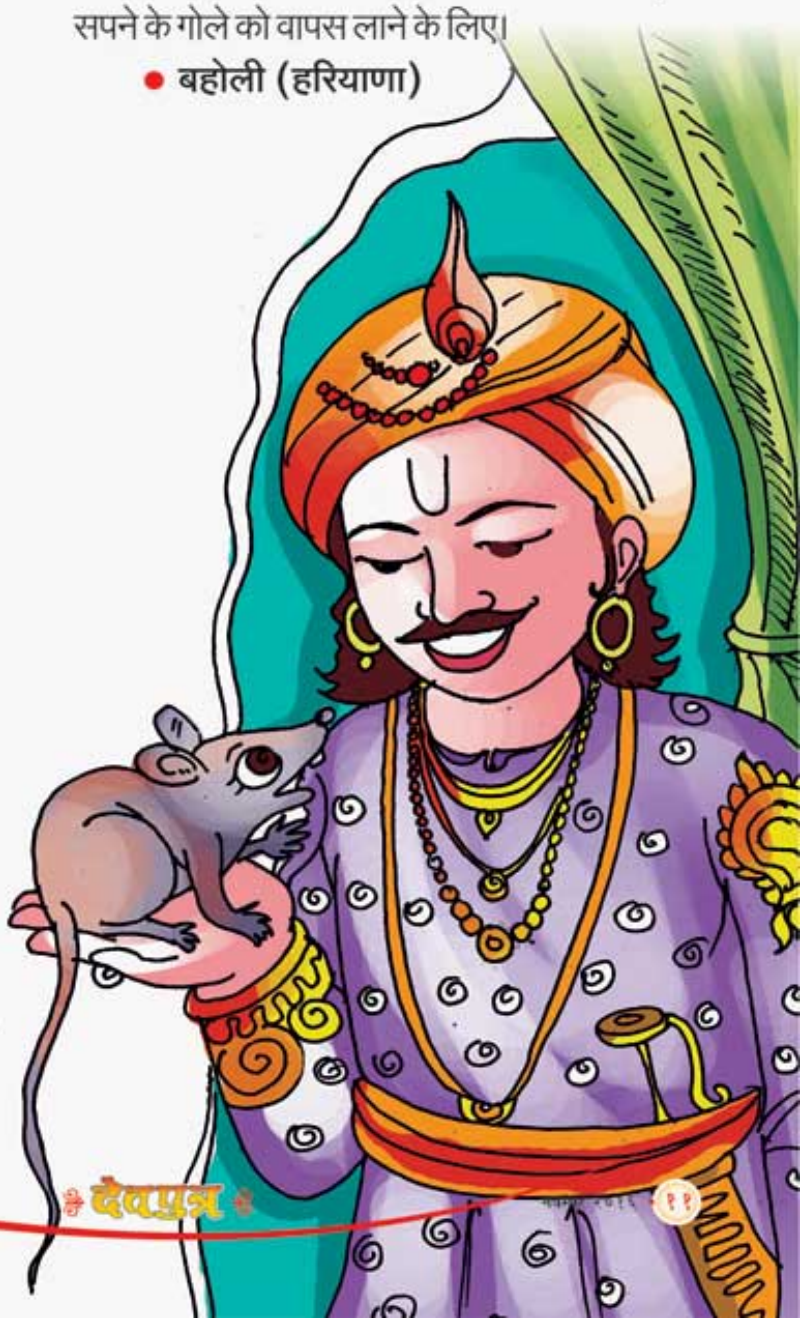

बाल दिवस : १४ नवम्बर

हम बच्चे

कहानी : डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा

भारत माता के दुलार में पले हुए
हम बच्चे हैं आन-बान के रखवाले,
संकट आने पर हमने संघर्ष किए,
हम अपने कर्तव्यों के है मतवाले।

जग में कोई भी न हमें दुर्बल समझे,
महाशक्तियों से उभरे हम सेनानी।
अहंकारवश जो भी हमसे टकराया,
टिक न सका वह कभी कहीं भी अभिमानी।

शेरों के मुंह फाड़ दांत भी हम गिनते,
हमें शेरनी को भी दुहना आता है।
परम्परा रच देते हैं नचिकेता-सी।
संकल्पों से नया मार्ग बन जाता है।

जब हमने स्वदेश के हित में ललकारा
कई पूतनाओं ने तब दम तोड़ दिया।
अत्याचारी कंस मिल गए मिट्टी में
जीवन पथ पर नए हर्ष को मोड़ दिया।

वीर कन्हाईलाल दत्त हम थे जिनकी
चिता भस्म के लिए देव भी तरस गए।
धन्य हो उठा धरती का चप्पा-चप्पा
फूल और आंसू बढ़ चढ़ कर बरस गए।

जहाँ चंद्रशेखर बालक आजाद बना,
नए शौर्य की धारा उस दिन बह निकली
स्वतंत्रता की, स्वाभिमान की क्षमता की
सौरभ लेकर चारों ओर बयार चली।

हम दृढ़ता के सूत्रधार हैं लेकिन हम
विनम्रता से अपनी बात बताते हैं
स्नेहभाव से मिलजुल कर श्रम के द्वारा
वीरानों को भी हम चमन बनाते हैं।

• गिलूंड (राज.)

गीता निकेतन आवासीय विद्यालय

सलारपुर रोड़, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) सम्पर्क: 01744-294064, +91-9468314303

ई-मेल : gitaniketan73@gmail.com वेबसाईट : www.gitaniketan.org

कुरुक्षेत्र में गीता निकेतन आवासीय विद्यालय की स्थापना वर्ष 1973 में की गई थी। अपनी स्थापना के पश्चात् विगत 43 वर्षों में विद्यालय ने शिक्षा जगत में विशिष्ट नाम अर्जित किया है। पूरे विश्व में गीता निकेतन के पूर्व छात्र अलग-अलग क्षेत्रों में विद्यालय की ख्याति का प्रसार कर रहे हैं। प्रभावी संस्कारक्षम वातावरण के साथ-साथ अपने आवासीय विद्यालय में विगत अनेक वर्षों से IIT, NIT, DU, NLU's, NDA तथा Medical आदि संस्थानों में छात्रों के प्रवेश की तैयारी के लिए अत्युत्तम वातावरण का निर्माण हुआ है।

विद्यालय ने योजना बनाई है कि एकादश कक्षा में ऐसे 10 अति मेधावी छात्र जो साधनहीन, निर्धन परिवारों से संबंधित हैं को आवासीय विद्यालय में पूर्ण निःशुल्क आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। ऐसे निर्धन एवं मेधावी छात्रों की पहचान के लिए विद्यालय में एक विशेष परीक्षा (Niketan Talent Reward Exam) प्रारंभ करने का निर्णय लिया है। कुरुक्षेत्र के अतिरिक्त देश के कुछ अन्य नगरों में भी यह परीक्षा आयोजित की जाएगी। उपर्युक्त पूर्ण निःशुल्क श्रेणी के अतिरिक्त इस परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कुछ छात्रों को भी विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। सर्व आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस विद्यालय में जहाँ हरियाणा के प्रत्येक जिले का विद्यार्थी अध्ययनरत है वहीं जम्मू कश्मीर, पंजाब, हिमाचल, दिल्ली, उ.प्र. राजस्थान, उत्तरांचल, बिहार, झारखण्ड, उत्तरपूर्वी राज्यों सहित लगभग 15 राज्यों के छात्र सही अर्थों में विद्यालय में एक लघु भारत का दृश्य उपस्थित करते हैं। आचार्य परिवार में 50 शिक्षक हैं तथा 20 अन्य सहयोगी कर्मचारी हैं।

छात्रवृत्ति परीक्षा के लिए निम्न पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।
गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, सलारपुर रोड़, कुरुक्षेत्र
सम्पर्क: 01744-294064, +91-9468314303
ई-मेल : gitaniketan73@gmail.com वेबसाईट : www.gitaniketan.org

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) एक बालक जिसने छोटी सी अवस्था में कठोर तपस्या एवं अचल निश्चय से भगवान का साक्षात्कार किया एवं संसार में अचलता का प्रतीक सितारा बना।

(अ) अभिमन्यु
(आ)ध्रुव
(इ)हनुमान

(२) एक बालक जिसने पिता के भयंकर अत्याचारों को सहकर भी धर्म और सदाचार का मार्ग नहीं छोड़ा एवं परम विष्णु भक्त कहलाया।

(अ)लव
(आ)उपमन्यु
(इ)प्रह्लाद

(३) एक बालक जो ग्रामीण परिवेश में पला बढा, बचपन से ही असुरों के विनाश एवं समाज में जागृति लाकर आजीवन धर्म की स्थापना में जुटा रहा।

(अ)कृष्ण
(आ)महावीर
(इ)अभिमन्यु

(४) एक बालक जिसने छोटी अवस्था में ही कश्मीरी पण्डितों की दुर्दशा देखकर देश धर्म की रक्षा हेतु अपने पिता को बलिदान देने के लिए आह्वान किया।

(अ)शिवराय
(आ)गोबिन्दराय
(इ)हरराय

(५)एक बालक जो बचपन से ही रामायण, महाभारत एवं वीरों की गाथाएं सुनकर, युद्धकला सीख कर हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना की शपथ लेकर उसे पूर्ण भी की।

(अ)राणाप्रताप
(आ)शिवाजी
(इ)लोकमान्य तिलक

(६) एक बालिका जिसने बचपन से ही बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी को सहेली बनाया बड़ी होकर अंग्रेजों से लड़कर मर्दानी कहलाई।

(अ)सावित्री
(आ)सीता
(इ)छबीली

(७) एक बालिका जिसे अंग्रेजों ने पेड़ से उल्टा लटका कर जीवित जला दिया पर उसने उन्हें क्रांतिकारियों का पता नहीं बताया और देशभक्ति का परिचय दिया।

(अ)मैना
(आ)दुर्गावती
(इ)लक्ष्मीबाई

(८) एक बालिका जिसने बचपन से अभावपूर्ण परिस्थितियों में परिवार की जिम्मेदारियां निर्वाह करते हुए अपना जीवन संगीत साधना के लिए अर्पित कर दिया आज वह स्वर कोकिला, स्वर साम्राज्ञी जैसे विशेषणों के साथ विश्व प्रसिद्ध है।

(अ)सुरैया
(आ)लता मंगेशकर
(इ)अनुराधा पौड़वाल

(९) एक बालिका जिसने बचपन में खेल खेल में श्रीकृष्ण की मूर्ति को अपना पति मान लिया था बड़ी होने पर राजस्थान के प्रसिद्ध राजवंश की यह बेटी ऐसी ही राजघराने की बहू बनी पर उसका अनन्य कृष्ण प्रेम उसे महान भक्त के रूप में प्रसिद्ध बना गया।

(अ)पद्मिनी
(आ)मीरा
(इ)पन्ना

(१०) एक बालिका जिसने बचपन में अपनी एक बच्चा टोली बनाकर आजादी की लड़ाई में संदेश एवं सूचनाएं उचित लोगों तक पहुँचाने का काम कर सहायता की। इसकी टोली वानर सेना के नाम से पुकारी जाती थी।

(अ)इन्दू (इंदिरा)
(आ)निवेदिता
(इ)सरोजिनी नायडू

(उत्तर इसी अंक में।)

फिर आए मेहमान

कहानी : नरेन्द्र देवांगन

भारत के पश्चिमी तट पर था अलबेलिया जंगल। अपनी खूबसूरती, शांत वातावरण और खासतौर पर प्रवासी पक्षियों के आने के कारण यह स्थान बहुत प्रसिद्ध था। दूर-दूर से सैलानी आकर यहां की खूबसूरती का आनंद उठाते। तरह-तरह के दुर्लभ पक्षियों को देखकर सैलानी बहुत आकर्षित होते थे।

जंगल के सारे जानवर खुश थे। आजकल उनके प्रिय मित्र साइबेरिन क्रेनों के आने का मौसम जो था। पर समय बीतता गया और अभी तक साइबेरियन क्रेन नहीं आए थे।

धीरे-धीरे यह खबर फैलने लगी कि अलबेलिया जंगल में पक्षियों की संख्या बहुत कम हो गई है और अब वहां देखे लायक कुछ नहीं है। धीरे धीरे अब वहां सैलानियों के आने की संख्या भी कम होने लगी। जंगल के जानवरों को अब अपनी गलती का एहसास हुआ कि उन्होंने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है।

कुछ दिनों बाद कड़ाके की ठंड पड़ने लगी। तब जाकर कुछ ही क्रेन आते दिखाई दिए। पूरे जंगल में यह खबर फैल गई। जानवर उनके स्वागत में उमड़ पड़े।

हालचाल पूछते हुए रिंकू हिरण बोला-''मित्रो! हर बार आप हजारों की संख्या में आते थे, फिर इस बार इतनी कम संख्या में क्यों आए हो?''

क्रेनों के दल का सबसे बड़ा सदस्य बोला-''यहां आना तो सभी चाहते थे, पर वायुमंडल में प्रदूषण के कारण हमारे बहुत से साथी बीमार पड़ गए और कुछ तो बच भी नहीं पाए। हमें आपके पास यह संदेश देने के लिए भेजा गया है कि अब शायद हम कभी यहां आ नहीं पाएंगे।''

यह बात सुनकर जंगल के प्राणी उदास हो गए। वर्षों से वे आते थे और उन्हें अपने देश की रोचक बातें बताते थे। सब मिलकर तरह-तरह के करतब करते तो बड़ा मजा आता था। फिर उनके इन क्रियाकलापों का आनंद लेने

के लिए सैलानी दूर-दूर से आते थे।

उनकी बात सुनकर सब प्राणियों ने कहा-''नहीं-नहीं मित्रो! तुम यहां आना मत छोड़ो।''

तब क्रेनों के मुखिया ने कहा- ठीक है, तुम प्रदूषण को कम करने का प्रयास करो, तभी अगली सर्दियों में हम यहां आ सकेंगे।''

जंगल के सभी जानवरों ने आपस में विचार विमर्श किया। सब राजा शेरसिंह के पास गए और उन्हें सारी बातें बताईं। शेरसिंह भी उनके न आने से उदास थे।

शेरसिंह ने साइबेरियन क्रेनों को आदर सहित अपने दरबार में बुलाया और उन्हें प्रदूषण समाप्त करवाने का वचन दिया।

राजा शेरसिंह द्वारा वचन देने पर साइबेरियन क्रेन वहां ठहर गए। शेरसिंह ने जंगल के आसपास चल रहे कारखाने और खदान मालिकों को प्रदूषण को कम करने का सख्त आदेश दिया।

जंगल के जानवरों ने मिलकर पक्षियों के पुनर्वास की योजना बनाई। उनके आहार की पूरी व्यवस्था की गई। सबने मिलकर झील को साफ किया और इसके अलावा भी अनेक तरह के प्रयास किए गए।

जंगल के जानवरों को इतने से ही संतोष न हुआ। उन्होंने जगह-जगह फूल-पौधे लगाकर जंगल को हरा-भरा कर दिया। झील के नौकायन और किनारे पर बैठने के लिए पत्थर की शिलाएं काटकर रख दीं, ताकि सैलानी वहां बैठकर प्रकृति का भरपूर आनंद ले सकें।

उनकी मेहनत रंग लाई। कुछ ही दिनों में प्रदूषण पर नियंत्रण हो गया। धीरे-धीरे प्रवासी पक्षी फिर से अलबेलिया जंगल की ओर आकर्षित होने लगे। यह खबर धीरे-धीरे सभी तरफ फैल गई। अब तो पक्षियों और सैलानियों के आने का तांता सा लग गया।

साइबेरियन क्रेनों ने जाने से पहले वादा किया कि वे अगले वर्ष आएंगे और अपने सभी साथियों को भी लाएंगे।

● खरोरा (छ.ग.)

अच्छा बच्चा

कविता : डॉ. प्रभा पंत

सूरज, चंदा, तारे जैसे
रोज समय पर आते हैं।
वर्षा के मौसम में आकर
बादल नभ पर छा जाते हैं।

रोज सबेरे पंछी सारे,
नीड़, छोड़ उड़ जाते हैं।
सांझ ढले अपनी टोली संग
वापस घर आ जाते हैं।

ऐसी ही तुम को भी बच्चो!
अच्छा बच्चा बनना है।
माता-पिता के कहे बिना,
हर काम समय पर करना है।

शब्दक्रीडा(२३)

हमारे महापुरुष

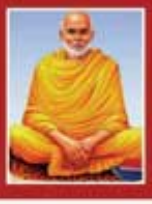
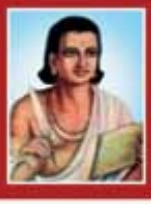

बच्चो! शब्द क्रीड़ा में इस बाल साहित्य, कला, संगीत, ज्ञान विज्ञान, समाज सुधारक, पथ प्रवर्तक, राजनीति, स्वातंत्र्य समर आदि क्षेत्रों के दस महान लोगों व उनके क्षेत्रों के नाम खोजना है। आपको ध्यान आएगा किसी भी क्षेत्र में रहकर भारत माता की उत्कृष्ट सेवा की जा सकती है। हमारा कॅरियर चाहे जो चुनें रुचियां या क्षमता भिन्न होने पर भी देव सेवा समाज में कोई बाधा नहीं होती। उत्तम, मध्यम और सामान्य बुद्धि कहलाने के लिए आपको १०,८,५ सही जोड़ी बनाना है।

यह भी कीजिए- जानकारियाँ जुटाइए कैसे इन लोगों ने अपने कार्यों से देश, समाज व संस्कृति का मान बढ़ाया?

बा	मं	स	म	स	र्त	मं	चि	ति	स	त्र	रू	वै	ग्रु	पं
र	ल	क	मा	व	ग	द	ति	मा	मं	त	ज्ञा	बा	थ	सं
न्धी	वि	गं	रू	ल	क	गा	ज	ग	क	नि	न	द	व	चि
पं	वि	ज	गा	व	क	सु	ल	ध	क	वि	जू	का	गी	र
थ	का	ण्डे	ल्लु	ध	धा	पा	वा	ना	रा	य	ण	गु	रू	स्व
प्र	व	व	ता	र	ण्डे	हा	व	गा	व	शा	रु	र	तं	रा
व	र	र	क	वै	सु	ति	र	र्जु	ह	ना	का	त्र	र्मा	बा
र्त	सं	व	वि	दा	रु	ने	ल	न	न	लि	ता	त	शा	का
क	हा	लि	वै	व	गा	ज्ञा	धा	क	त्मा	सै	रु	न	लि	त्रा
र	रा	ज्ञा	ल्लु	नि	र्मा	ज	दे	व	ना	र्त	चि	दा	वा	पं
क	क	व	त्मा	ना	नि	व	व	नी	सं	त	स	गं	ह	ना
रा	र	र्जु	बा	र	गा	ल्लु	चि	प्र	गी	गा	र	थ	न	गा
जा	ज	न	ध	जू	र	रा	ता	त्र	त	सै	र	जा	त्मा	गा
म	ति	ने	स्व	नी	बै	म	त्र	न्धी	का	रा	क	ज	का	ने
ल	क	व	ता	ता	ल्लु	तं	धी	त्मा	र	र	हा	हा	गा	रा

(सही उत्तर इसी अंक में)

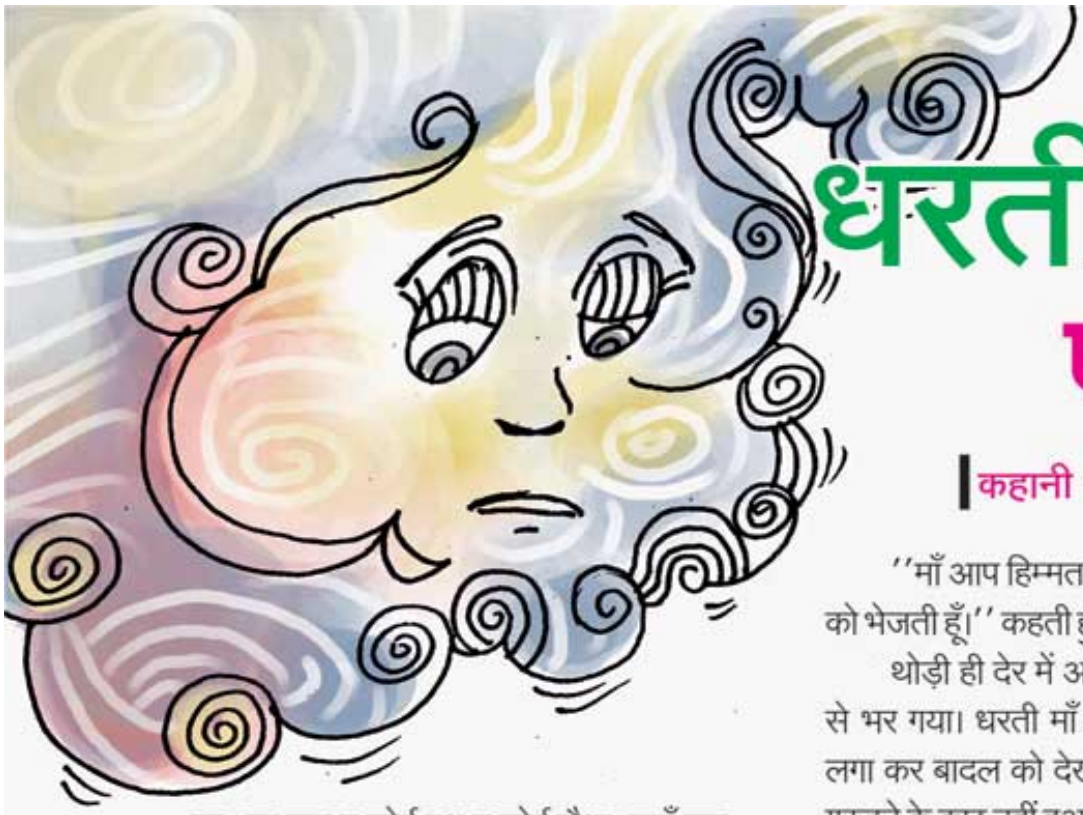

धरती की पीड़ा

कहानी : डॉ. नीलम राकेश

दूर-दूर तक न कोई वृक्ष न कोई पौधा। यहाँ तक कि घास का एक तिनका भी नहीं दिखाई दे रहा था। चारों ओर रूखी सूखी धूल ही धूल। उस पर एक बूढी महिला फटेहाल कपड़े में कराहती हुई सी बैठी थी।

उसी समय आकाश में बिजली चमकी। बूढी महिला ने बड़ी आशा भरी नजरों से आकाश की ओर देखा बिजली की नजर उस बूढी महिला पर पड़ गई। वह लहराती हुई नीचे उतर आई।

''ऐ अम्मा, तुम कौन हो? और इतने दर्द से क्यों कराह रही हो?'' बुढिया के पास बैठ कर बिजली ने पूछा।

''मैं तो धरती हूँ बेटा। पर तुम कौन हो?'' कराहते हुए महिला ने जवाब दिया।

''अरे आप धरती माँ हो...मेरा नाम बिजली है। मैं आकाशीय बिजली हूँ...धरती माँ, आप इतना कराह क्यों रही हों? आपको क्या कष्ट हैं?''

''बेटा, मैं बहुत प्यासी हूँ। वर्षा न होने के कारण सब कुछ नष्ट होता जा रहा है। अब तो प्यास के कारण मेरा भी अन्त निकट आ गया लगता है।'' लम्बी कराह के साथ धरती माँ बोली।

''माँ आप हिम्मत रखिए। मैं जा कर फौरन बादल को भेजती हूँ।'' कहती हुई बिजली वापस चल दी।

थोड़ी ही देर में आकाश धने काले सफेद बादलों से भर गया। धरती माँ आशा भरी नजरों से टकटकी लगा कर बादल को देखने लगी। बड़ी देर तक सिवाय गरजने के कुछ नहीं हुआ। धरती माँ की सब्र का बांध टूट गया और उन्होंने कातर दृष्टि से बादल की ओर देखते हाथ जोड़ दिए। बेचैन हो कर बादल तेजी से नीचे उतर आया।

धरती माँ का हाथ पकड़ कर अपने माथे से लगा कर बोला-'' माँ मुझे शर्मिंदा मत करो। मैं बहुत मजबूर हूँ। मेरे पास एक बूंद पानी नहीं है। मैं क्या करूँ?''

''तुझे क्या कहूँ बेटा, मेरी अपनी चार चार बेटियां हैं सर्दी, गर्मी, वसन्त और वर्षा। एकदम नियम से वे आती जाती थीं। कोई मेरे पास बनी रहती थीं। मेरी देखभाल करती थी। मेरा श्रृंगार करती थीं। परन्तु उन्होंने भी आना छोड़ दिया है। सर्दी, गर्मी तो अभी आ जाती हैं। परन्तु इनका भी आने आने का कोई समय नहीं रह गया है। इसी कारण प्रकृति के सारे नियम गडमड हो गए है।'' धरती माँ ने एक गहरी सांस ली।

''माँ आपकी बेटी बसंत मुझे मिली थी। आपके पास आने को बहुत बेचैन थी।'' बादल बोला।

''तो आती क्यों नहीं बेटा? उसे कौन रोक रहा है?'' धरती माँ ने पूछा।

''यहाँ की परिस्थिति माँ! बेचारी बता रही थी कि

जब से ओजोन की पर्त में छेद हुआ है। यहाँ के वायुमंडल में सूर्य की तेज किरणें आ गई है। वे उसके कोमल शरीर को झुलसा देती है। गर्मी यहाँ से जाती नहीं वर्षा आती नहीं। ऐसे में उसके साथ आने वाले उसके नन्हे–नन्हे बच्चे जिन्हें हम फल–फूल कहते हैं, गर्भ में ही नष्ट हो जाते हैं। इसी से घबरा कर वह नहीं आती है।''

''ओह?.....'' धरती माँ के मुँह से आह निकल गई।

''माँ, मैं जा कर वर्षा बहन को बुलाता हूँ। उन्हीं के आने से कुछ होगा।'' कहता हुआ बादल आकाश की ओर चल दिया।

कुछ ही देर बाद रिमझिम करती हुई वर्षा आ कर माँ के पास बैठ गई। माँ की दयनीय दशा देखकर वह रोने लगी।

''माँ ये क्या हाल हो गया आपका?''

''तुम मेरे लिए रो रही हो? मेरे सारे धरती पुत्र इससे भी बुरे हाल में है। पानी और दाने को तरस रहे है। बीमारियाँ फैलती जा रही है।....तुम पानी क्यों नहीं बरसाती बेटी?'' कहते कहते धरती माँ की सांस फूल गई।

''कहाँ से लाऊँ पानी माँ?.....ये सब तुम्हारे इन्हीं धरती पुत्रों के कारण हो रहा है।

''मैं समझी नहीं वर्षा।'' आश्चर्य से धरती माँ अपनी बेटी को देख रही थी। जिसे वो दोषी समझती थी वो स्वयं को निर्दोष बता रही थी।

''माँ वर्षा के लिए जल की आवश्यकता होती है। ये जल हमें जलाशयों और पेड़ पौधों से मिलता है। परन्तु आपके ये धरती पुत्र, वृक्षों को काट काट कर कंकरीट के जंगल खड़े करते जा रहे है। जलाशयों को पाट कर मकान और फैक्ट्री लगाते जा रहे है। इन फैक्ट्रियों से निकलने वाला प्रदूषित धुंआ, पेड़ के लिए सांस लेना मुश्किल कर दे रहा है। वो बेचारे मरते जा रहे हैं। फिर बताओ माँ, हम जल कहाँ से लाए?''

परेशान हो कर धरती ने वर्षा की ओर देखा– '' ये तो बड़ी मुसीबत हो गई, पर कोई तो रास्ता होगा ना बेटा?''

''मेरे पास थोड़ा सा जल है माँ। मैं उसे तुम्हारे पास भेजूंगी पर तुम अपने इन धरती पुत्रों को समझाओ, पर्यावरण की रक्षा करें। नहीं तो इनके साथ साथ हम सब भी नष्ट हो जाएंगे।'' कहते हुए वर्षा उठी और धरती माँ के चरण छू कर आकाश की ओर चल दी।

कुछ ही पलों में धरती पर मूसलाधार वर्षा होने लगी। धरती माँ की प्यास बुझ गई थी। अब आगे का काम धरती पुत्रों के जिम्मे है।

● लखनऊ (उ.प्र.)

रोचक जानकारी

हँसी खुशी की अभिव्यक्ति पशु–पक्षी और कीड़ों में भी होती है

जानकारी : गोवर्धन यादव

हँसी खुशी की अभिव्यक्ति मनुष्यों के हिस्से में ही नहीं आई हैं, उसका आनन्द पशु–पक्षी और कीड़े भी उठाते हैं, सच तो यह है कि आनन्दानुभूति को व्यक्त करने वाले, भाव भरे नृत्य अभिनय मनुष्य ने अन्य जीवों से ही सीखे हैं, इस प्रकार के भावों में इन प्राणियों के नाम उल्लेखित किए जा सकते हैं। मयूर–नृत्य, भ्रम–गीत, कोकिल तान, झींगुर– लय आदि की चर्चा कला के क्षेत्रों में होती रहती है और उनका अनुसरण भी किया जाता है।

– मेघ–दर्शन से विभोर **मयूर–नृत्य** प्रसिद्ध है और नृत्य कला का एक अंग भी है।

– मेफ्लाई नामक मक्खी का **नृत्य–संगीत** विश्व प्रसिद्ध है। युवा मेफ्लाई युवती मेफ्लाई को तरह–तरह की आकर्षक मुद्राओं में नृत्य दिखाता है।

– मादा मछली डैने फैलाकर नाचती है, जो परिधान का छोर पकड़कर तैरने की सी मुद्रा में किए जाने वाले **नृत्यों का प्रेरणा स्त्रोत** है।

– बिच्छू आकर्षक **बाल डांस** करते हैं।

– मकड़े का नृत्य भी तालमय होता है। आठ दस मकड़े **ट्विस्ट** भी करते हैं।

– बरसात में जंगली बतखें नर–मादा मिलकर दिनभर नाचती है और दिन ढले घर लौट आती हैं।

– दक्षिण अफ्रीका की **डांसर मैना** संगीत की सुमधुर धुनों के साथ सामूहिक नृत्य करती हैं, न्यूजीलैण्ड की बर्ड आफ पैराडाइज भी नृत्य निपुण होती हैं और तो और युवा घोंघा भी गुनगुनाहट के साथ विभोरवस्था में नृत्य करता है।

– सारस प्रणय याचना के समय परों और पैरों को एक निश्चित ताल के साथ पटकते हुए गोलाकार घूमते है। उनका स्वर भी ताल के अनुरूप होता है जियरे गणतंत्र के वत्सुई समाज का नाम ही सम्मानित सारसों का नृत्य हैं।

– मधुमक्खियों के नाच तो अत्याधिक अर्थगम्य होते हैं, नृत्य की उनकी मुख्य भाषा है विचार–संप्रेषण का यही माध्यम उनके पास सर्वाधिक विकसित है।

– मधुमक्खी की प्रत्येक नृत्य मुद्रा का विशिष्ट अर्थ होता है भोजन भण्डार पास ही मिल जाए तो छत्ते के ऊपर घुमरी जैसा नाचेगी। यदि भण्डार अधिक दूर हो तो सीधे उड़ती हुए ऊपर जाएगी और फिर जिस दिशा में भोजन हो, उधर उड़ेगी। ये दूरी को भी नृत्य द्वारा संकेतिक करती हैं। उनके संकेत इतने सही होते है कि मधुमक्खियाँ अभीष्ट दिशा में ही उड़ती हैं।

● छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

मानवता का वरदान हैं हम

| कविता : नरेन्द्र मण्डलोई 'माण्डलिक' |

हम नन्हें-नन्हें बच्चे हैं।
आँगन अंगूर के लच्छे हैं।।
हम भले उम्र के कच्चे हैं।
पर बड़ों-बड़ों से अच्छे हैं।।

बालपने में अलमस्त हैं हम।
खेल कूद में व्यस्त हैं हम।।
खाने-पानी में मस्त हैं हम।
दादा-दादी के हस्त हैं हम।।

एकलव्य का तीर हैं हम।
रामकृष्ण बलवीर हैं हम।।
गंगा-जमुना तीर हैं हम।
केशर क्यारी-कश्मीर हैं हम।।

हम भविष्य के सपने हैं।
भारत माता के अपने हैं।।
हम से आंगन है हरा-भरा,
शस्य श्यामला वसुन्धरा।

● दिगठान (म.प्र.)

सोचे विज्ञानी खड़ा खड़ा पौधा किससे कौन बड़ा?

बच्चो! महान वनस्पति विज्ञानी आचार्य जगदीश चन्द्र बसु जिनका जन्म एवं निर्वाण दिवस दोनों इसी माह है अपने वनस्पति वाटिका के एक भाग में एक ही प्रकार के विभिन्न पौधों का अवलोकन कर रहे हैं। क्या आप बता सकते हैं पौधों का छोटे से बड़ा क्रम।

(उत्तर इसी अंक में।)

गुन्नू अब पांचवी कक्षा में आ गया था। वह बड़ा हो रहा था। इसलिए माता–पिता बड़े ही उत्साहित होकर उसके लिए बड़े नाप के कपड़े, जूते, चप्पल खुशी–खुशी लेकर आए पर गुन्नू ने वो सब चीजें ऐसे ली जैसे रद्दी का अखबार। पता नहीं अभी तक वह पुरानी बातें भूल नहीं पाया था। माता–पिता भी परेशान हो जाते वो उस पल के बारे में सोच सोच कर कष्ट में रहते जब गलती से बगीचे का दरवाजा खुला रह गया था और गुन्नू के प्रिय गमले से पूरा पौधा चबा–चबा कर बकरी ने समाप्त कर डाला था। अपना काम करके बकरी तो वापस चली गई पर गुन्नू का मन बहुत उदास हो गया दरअसल वो रत्नागिरी का चमेली का पौधा था। गुन्नू के माता–पिता को शहर की किसी भी पौधशाला (नर्सरी) उद्यान में मिला नहीं। गुन्नू के माता–पिता ने उसे कई बार कहा कि तब तक दूसरा पौधा रोप देते हैं और रत्नागिरी वाले मामा से आग्रह कर लेते हैं कि तब तक दूसरा पौधा फिर ले आए। लेकिन गुन्नू ने तो खुद को नएपन, ताजगी आदि से अलग कर रखा था। उसने गमला यों ही रहने दिया। हालांकि वह बाकी काम तो पूरे अनुशासन से ही कर रहा था। विद्यालय जाना, समय पर सारे विद्यालय के कार्य करना, अपना खेलने, जूडो–कराटे की दिनचर्या व हर रविवार तैराकी के लिए जाना मगर उसका मन प्रसन्न नहीं था।

एक दोपहर जब वह विद्यालय से आया तो उसने दूर से ही देखा कि उसके सूने गमले में एक लाल गुलाब दमक रहा था। गुन्नू जल्दी जल्दी पास आया तो देखा कि किसी ने गुलाब की डंठल को फूल के साथ ही गमले में रोप दिया है। पहले तो गुन्नू को कुछ गुस्सा–सा आने लगा लेकिन अगले ही पल उसने चाव से उस लाल गुलाब को निहारना शुरु कर दिया। माँ चुपचाप बैठक की खिड़की से यह सब देखकर बैठक की खिड़की से यह सब देखकर प्रसन्न हो रहीं थीं। कुछ मिनट बाद गुन्नू घर के भीतर आ गया। न जाने क्यों वो लाल गुलाब उससे मित्रता करना चाह रहा था। शाम को बड़े प्रेम से गुन्नू ने उस पौधे को पानी से सींचा। गुन्नू पास रहता तो वह गुलाब और ज्यादा खुशबूदार हो जाता था।

करीब एक सप्ताह बाद बहुत मजेदार बात यह हुई कि उस डंठल को अच्छा हवा पानी मिलने से उसमें एक कली और उग आई। यह देखकर गुन्नू की खुशी का ठिकाना न था। कुछ दिनों में वहाँ एक और लाल गुलाब खिल गया। गुन्नू की उदासी अब तक तो हवा होकर कहीं लापता हो गई थी। अब उसका मन उस लाल गुलाब के पौधे ने मोह लिया था। यह सब देखकर माता–पिता बड़े खुश थे। वे यही सबक अपने बेटे को सिखाना चाहते थे कि जो चीज अपने काबू में नहीं उस पर रोना नहीं और जो बदलाव मन की खुशी को पुनर्जीवित कर दे उसे चट से अपना लेना चाहिए।

बदलाव से लगाव

कहानी : पूनम पाण्डे

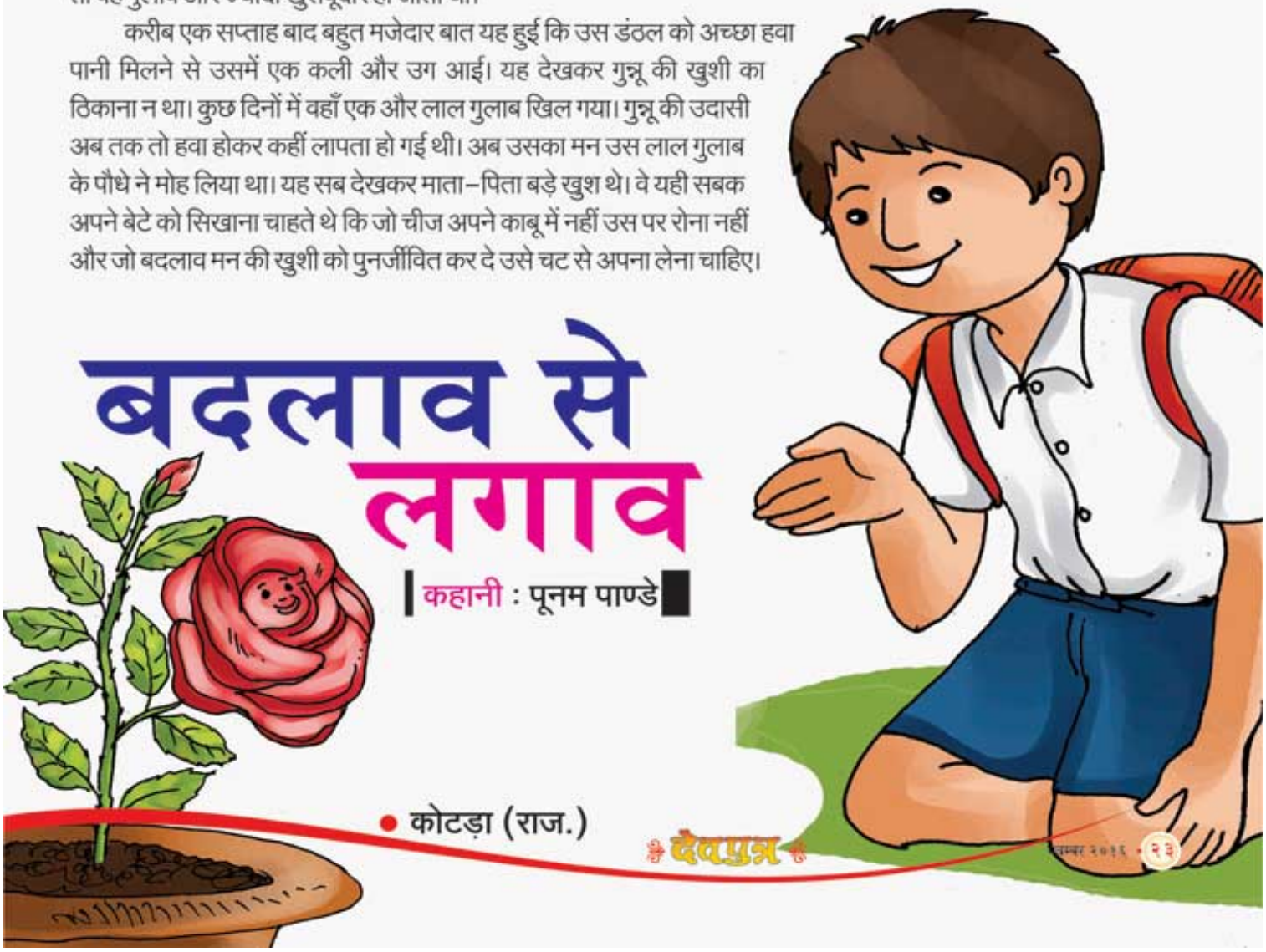

• कोटड़ा (राज.)

२६ नवम्बर : संविधान दिवस

क्या आप जानते हैं?

हमारा संविधान

● भारत का संविधान संसार के अन्य सभी देशों के संविधानों से आकार में बड़ा है।

● भारत के सभी राजनैतिक दलों ने चुनाव लड़कर एवं अंतरिम सरकार बनाई २ सितम्बर १९४६ को जवाहरलाल नेहरू इसके प्रधानमंत्री चुने गए। इस सरकार ने प्रांतीय सभाओं से चुने हुए एवं केन्द्रीय सभा के सदस्यों को मिलकर संविधान सभा बनाई।

● संविधान सभा के अध्यक्ष बिहार के प्रसिद्ध विद्वान तथा स्वतंत्रता सेनानी डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा चुने गए।

● संविधान सभा का पहला अधिवेश ९ दिसम्बर १९४७ को दिल्ली में हुआ। डॉ. सिन्हा की अस्वस्थता के कारण डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को अध्यक्ष चुना गया।

● संविधान का कच्चा प्रारूप तैयार करने के लिए डॉ. भीमराव अम्बेड़कर की अध्यक्षता में सर्वश्री गोपालस्वामी आयंगार, अल्लारी कृष्णास्वामी अय्यर, कन्हैया लाल माणिकलाल मुंशी, टी. टी. कृष्णामाचारी, मोहम्मद सादुल्ला, एन. माधवराव एवं डी. पी. खेतान इन सात सदस्यों की समिति बनाई गई थी।

● समिति ने १४१ दिन में संविधान का विशाल प्रारूप तैयार कर दिया। सरकार द्वारा प्रकाशित इस प्रारूप पर ८ महिने तक देश के अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए तब ४ नवम्बर १९४८ को संविधान सभा ने उस पर विचार आरंभ कर दिया।

● **२६ नवम्बर १९४९ संविधान सभा ने इसे भारत का संविधान स्वीकार कर २६ जनवरी १९५० से देश में लागू कर दिया।**

● २६ जनवरी हमारा गणतंत्र दिवस बना और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद उसके प्रथम राष्ट्रपति।

● न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व भारतीय संविधान द्वारा लोकतंत्रिक गणराज्य के आधार निश्चित किए गए।

(१) समानता का अधिकार (२) स्वतंत्रता का अधिकार (३) शोषण के विरुद्ध अधिकार (४) धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (५) संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार (६) संपत्ति का अधिकार और (७) संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय जाने का अधिकार। यह संविधान द्वारा नागरिकों का प्रदत्त मूल अधिकार है।

● १९७६ में एक संशोधन द्वारा नागरिकों के १० कर्तव्य भी इसमें सम्मिलित हुए।

● २६ नवम्बर हमारा संविधान दिवस है।

बच्चा हिंदुस्थान का

कविता : किंशुक किकी

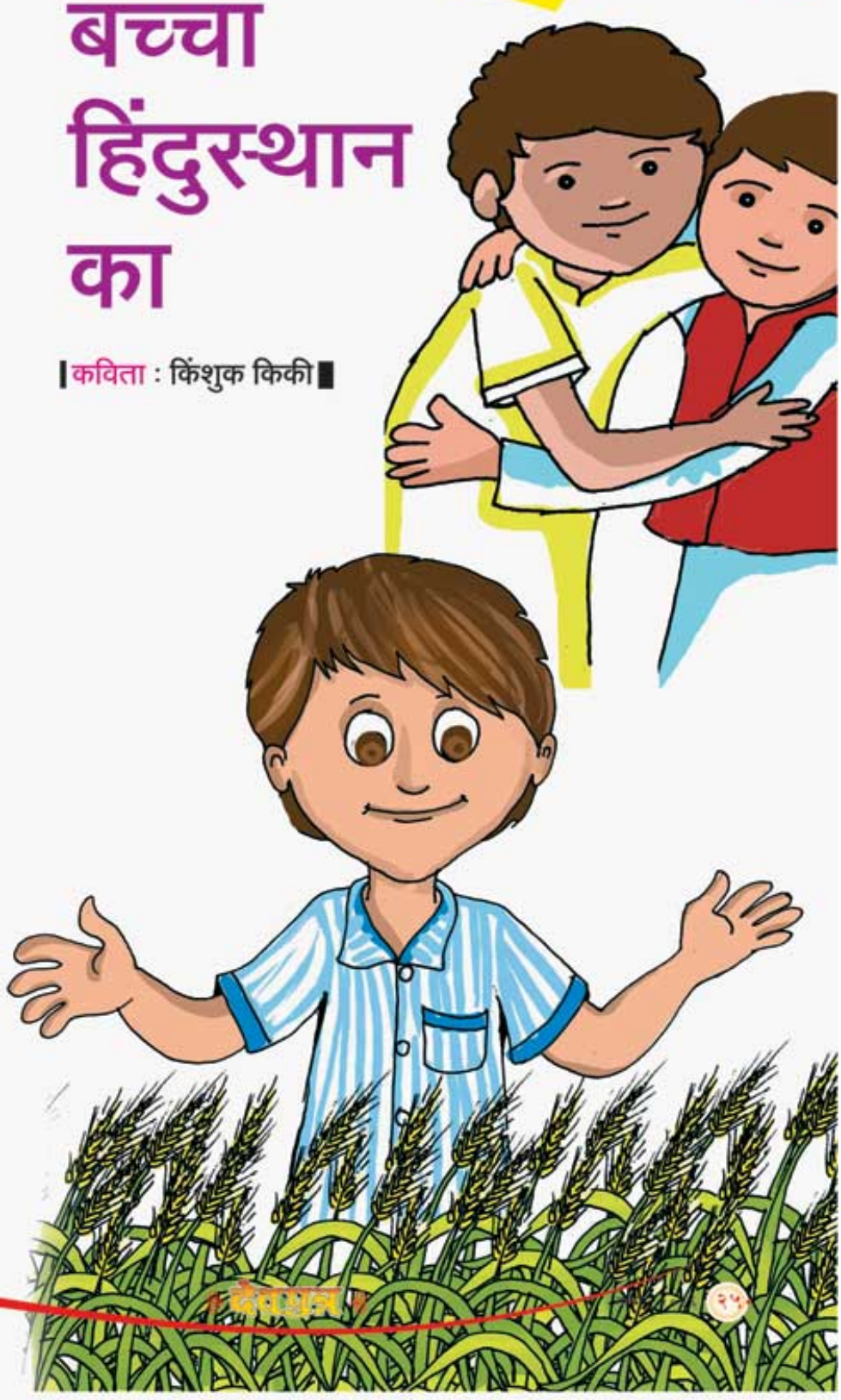

जो लाखों में एक हो
और जो दिल का नेक हो
जैसे कोई खिला खिला
पुष्प किसी बागान का।
बच्चा हिन्दुस्थान का।।
सुख-शांति की आस करे
जो खुद पर विश्वास करे
हरपल हरदम जो ध्यान रखे
माँ-बाप के सम्मान का।
बच्चा हिन्दुस्थान का।।
जो ईश्वर का नाम ले
सूझ-बूझ से काम लें
बेइमानों की बस्ती में
काम करे ईमान का।
बच्चा हिन्दुस्थान का।।
जिसे देख छाती फूले
जिसकी बातें मन छू ले
हर कीमत पर ध्यान रखे
अपने देश के मान का।
बच्चा हिन्दुस्थान का।।
ऐसे अधिकार करे
शत्रु का संहार करे
ज्ञान दिलों में जो रोपे
इतिहासों विज्ञान का।
बच्चा हिन्दुस्थान का।।
पेड़ों को न कटने दें
हौसले नहीं जो घटने दे
श्रम से पालन करे सदा।
खेतों का खलिहान का।
बच्चा हिन्दुस्तान का।।
काम सभी जो नेक करे
जाति पांति को एक करे
बतलाए जो सच्चा अर्थ
गीता और पुराण का।
बच्चा हिन्दुस्तान का।।

• इन्दौर (म.प्र.)

बबलू के सवाल

कविता : भगवती प्रसाद द्विवेदी

बबलू बस करते सवाल हैं
क्या उत्तर दें, बुरा हाल है।
बबलू तीन बरस के बच्चे
मगर अक्ल से तनिक न कच्चे
नई चीज कोई दिख जाती
पूछें, कैसे काम है आती?
कौन फूल में गंध भरे जी?
पत्ते कैसे दिखें हरे जी ?
मिर्चों में तीखापन क्यों है?
मेघा जल बरसाते कैसे?
सूरज चांद कहाँ सुस्ताते?
फिर प्रकाश के फूल खिलाते।
कुदरत का कैसा कमाल है
क्या उत्तर दें, बुरा हाल है।
बबलू जो जिज्ञासु बड़े हैं
मन में अनगिन प्रश्न खड़े हैं
उलझन उनकी जाती बढ़ती
नई चीज अचरज से भरती
साथी से, शिक्षक से पूछें
माता-पिता, घर भर से पूछें
उल्टे-सीधे प्रश्न अनोखे
कुछ अटपटे और कुछ चोखे
अगर सवाल टालना चाहें
बबलू जी की उलझें राहें
हर जिज्ञासा शांत करेंगे
उन्हें नहीं हम भ्रांत करेंगे
उत्तर पा बबलू निहाल हैं
मन में फिर कोई सवाल है।

• पटना (बिहार)

षट्भुजा

•देवांशु वत्स

खेलने के नियम

सफेद बक्से में १ से ९ तक के अंकों को इस तरह से लिखें कि तीर की सीध में आने वाले बक्सों के अंकों का योग उसी तीर वाले त्रिभुज में लिखे अंक जितना हो।

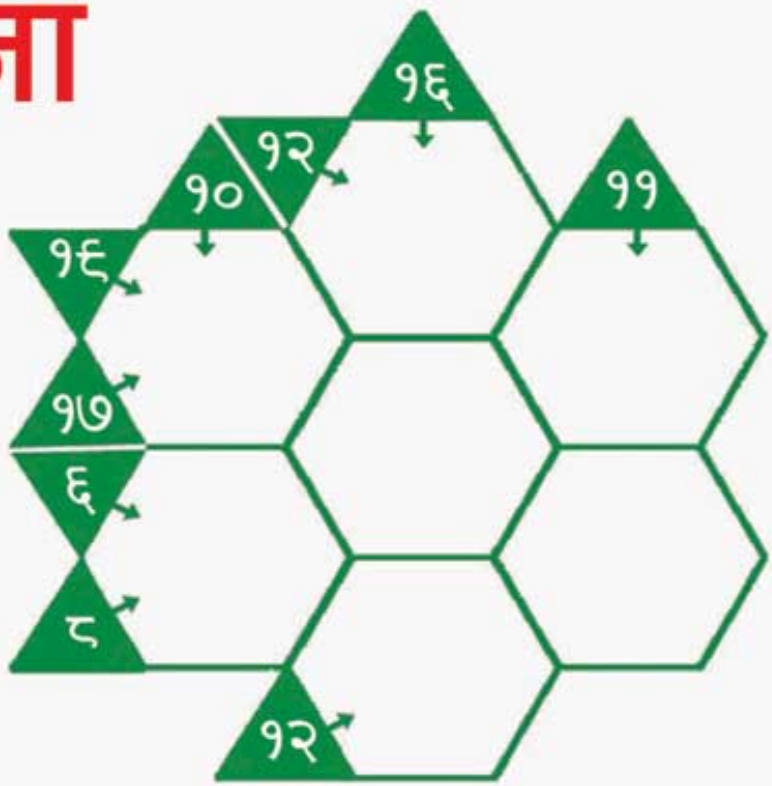

(उत्तर इसी अंक में।)

जानो पहचानो

● वे महाराष्ट्र के प्रसिद्ध समाज सुधारकों में एक हैं। उनको महात्मा कहा जाता है।

● उनका जन्म १८२७ में हुआ। इनका पैतृक व्यवसाय फूलों का था।

● आपने १८५४ में आधुनिक भारत की प्रथम कन्या शाला खोली।

● छुआछूत के विरुद्ध अपने कुँए से सबको पानी भरने देने वाले प्रथम महापुरुष हैं।

● उनकी पत्नी सावित्री बाई ने अछूतोद्धार और महिलाओं की शिक्षा के उस समय बड़े विपरीत वातावरण में पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया।

● वे इन कार्यों के लिए समाज से बहिष्कृत होकर भी नहीं डिगे।

● लोकमान्य तिलक एवं आगरकर जैसे स्वराज्य सैनानियों के ऊपर अंग्रेजों द्वारा चलाए गए राजद्रोह के मुकदमों की पैरवी के लिए आपने धन संग्रह किया।

● १८८९ में यह महान समाज सुधारक परलोक सिधारे।

● सामाजिक समरसता के इस महान नायक की जयंती है इस माह २८ तारीख को।

● क्या आप जानते हैं इनका नाम?

(उत्तर इसी अंक में)

कोशिश रंग लाती है

कहानी : पद्मा चौगाँवकर

एक हाथ से सायकल साधता, दूसरे हाथ से द्वार खोल कर मनोज घंटी बजाते हुए अंदर दाखिल हुआ। बरामदे में सायकल खड़ी कर, उसने कॅरियर से बस्ता निकाला।

''मनू आ गया तू? माँ की आवाज थी–''बेटा तेरी बुआ का फोन आया था। पूछ रही थीं–मनू सायकल चलता है या नहीं?'' मैंने कह दिया चलाता क्या अब तो दौड़ाता है, आप तो हर कहीं जाने के लिए उसे सायकल चाहिए।''

मनोज हंसने लगा। उसने प्यार से सायकल की ओर देखा...और जैसे कहीं खो गया। बीते दिनों की घटनाएं उसकी आँखों के सामने घूम गई....

....अभी इन्हीं छुट्टियों की तो बात है, दीपावली की छुट्टियों में जयपुर से बुआ अपने दोनों बच्चों बंटी और दीपा के साथ इन्दौर आ रही थी। इसीलिए, मनोज इस बार नानाजी के गांव नहीं गया।

बंटी दीपा के साथ छुट्टियां मजे से बीत रही थी।

एक दिन अचानक बुआ ने पिताजी से, मनोज के लिए एक अनोखा उपहार मंगवाया– नई चमचमाती साईकिल। सायकल का उपहार देख, खुश होने के बजाय मनोज सहम गया।

मनोज की सी उम्र में, बच्चे, हर कीमत पर सायकल चलाने का मजा लेना चाहते हैं, पर मनोज के मन में, सायकल सवारी के लिए कोई ललक नहीं थी, उल्टे उसके दिल में सायकल देख डर लगा। दो पतले पहियों पर सायकल की सवारी कैसे कर लेते हैं लोग?

यह असंभव काम उसके बस का तो नहीं। उसकी पसंद बिना पूछे लाया गया यह महंगा उपहार उसे अच्छा नहीं लगा।

सबने उसे समझाया, कुछ भी मुश्किल नहीं है हम सब कोशिश करेंगे, देखना तुम्हें चलाना आ जाएगा।

घर के सामने ही छोटा सा मैदान था, बंटी और दीपा को भी सायकल चलाना अभी नहीं आता था। बंटी मनोज की उम्र का था और दीपा दोनों से छोटी।

सायकल देख, अब बंटी से रहा न गया, मनोज से पूछ कर उसने सायकल उठाई और मैदान में चलाने की कोशिश करने लगा। दीपा भी दौड़ी सायकल साधने, उसकी मदद करने लगा। दीपा भी दौड़ी सायकल साधने, उसकी मदद

करने। मनोज चुपचाप देख रहा था। बुआ और माँ आहाते में खड़ी बच्चों को देख रही थी।

बुआ बोली–''मनू, जाओ तुम भी कोशिश करो।''

दीपा आई और मनोज को खींच कर ले गई। पर मनोज डरा हुआ था। पर दीपा नहीं मानी, उसे सायकल थमा ही दी।

जैसे–तैसे सायकल पकड़कर वह घसीटता रहा। पर उस पर सवार होने की हिम्मत न जुटा सका।

दो दिन हो गए इसी तरह चलते हुए, कई बार सायकल समेत गिर भी पड़ा...उसका भय बढ़ता गया।

बंटी दो दिन में अच्छी सायकल चलाने लग गया था। मनोज के लिए दीपा की कोशिश जारी थी। वह उत्साह के साथ, उसे सायकल चलाने के तरीके समझाती जाती।

मनोज मन ही मन शर्मिंदा तो था,

उससे छोटी दीपा सायकल चलाने लग गई थी।

...आज उसने डर भगाने की पूरी कोशिश कर मन पक्का कर लिया था। पक्के इरादे से सायकल थामी, दीपा मदद को दौड़ी– बंटी भी आ गया।

''हाँ, चलो पांव रखो पेडिल पर, पहले कैंची करोगे तो गिरने पर ज्यादा चोट नहीं लगेगी...चलाओ पेडिल, चलो।'' बंटी ने कहा।

''अरे नहीं, उस तरफ यूं भार दोगे तो तुम सायकल पर गिरोगे, इस तरफ झुकाओगे तो सायकल तुम पर होगी। कंट्रोल हेंडिल में है।– हेडिल सीधा रखो, सीधा रखो।'' दीपा कहती जा रही थी।

''....और हां सायकल रोकने के लिए, आगे का नहीं पीछे वाला ब्रेक धीरे से लगाना समझे??''

मनोज ने आश्चर्य से पूछा–''तुमने ये सारी बातें कैसे जानी?''

तीन दिन से चला तो रही हूं मैं। चलाते–चलाते, गिरते–पड़ते सब जान गई बस। दीपा ने कहा।

मनोज ने कैंची से चार–छः पेडिल मारे और महसूस किया सायकल उसके बस में आ गई है।

सब उसमें उत्साह भर रहे थे उसमें भी अब उमंग जागी। अगले दिन फिर अभ्यास कल से आज का दिन अच्छा रहा। कई बार गिरा। चोटें भी खाई पर ५–६ दिन में सायकल चलाना उसे आ गया।

बुआ जब जाने को हुई मनोज ने कहा–''बुआ आपने मुझे कितना अच्छा उपहार दिया और बंटी–दीपा ने मुझे सायकल चलाना सिखा दिया...वरना...।''

''मनु यह तुम्हारी सबकी मेहनत और कोशिश का नतीजा है। हिम्मत और अभ्यास से ही सफलता मिलती है।'' बुआ की बात मनु के कानों में गूंज रही थी वह अभी भी कहीं खोया हुआ था। कि माँ ने पुकारा–''मनु कहां रह गए? लो फिर बुआ का फोन है, बात करो।''

● गंजबासौदा (म.प्र.)

राम का बाल दिवस

चित्रकथा - देवांशु वत्स

खेल हवा का

कविता : डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

बोल रहा कब से इकतारा।
खेल हवा का जग में सारा।।

हवा उपस्थित गुब्बारों में,
रिक्शा, ट्रक, मोटरकारों में।
हवा चलाती है पंखों को,
हवा बजाती है शंखों को।

ताकतवर है हवा बहुत ही
बिना हवा के नहीं गुजारा।।
कभी हवा वर्षा ले आती,
कभी हवा आंधी को लाती।

हवा पेड़-पौधों का भोजन,
हवा सभी जीवों का जीवन।
हवा सजाया करती सपने
हवा हमारा एक सहारा।।

पड़ती हवा नहीं दिखलाई,
होती हवा मगर सुखदाई।
कुछ गैसों का यह मिश्रण है,
ऊर्जा का बनती कारण है।
हवा बंद होते ही गूंजे
जोरदार हरदम हरकारा।।

हवा खराब हो गयी जिसकी,
पाँव तले की धरती खिसकी।
अच्छे कामों में जुट जाओ,
जग में अपनी हवा बनाओ।

नींव डालकर निर्माणों की
हर लो जीवन का अंधियारा।।

● गुरुग्राम (हरियाणा)

पुस्तक परिचय

श्री प्रबोध कुमार गोविल द्वारा रचित और राही सहयोग संस्थान द्वारा प्रस्तुत रोचक बहुरंगी साज सज्जा के साथ रोमांचक मजेदार बाल उपन्यास दो भागों में

श्रीहान-सुयश और मंगलगृह के जुगनू भाग - १

मंगल ग्रह के जुगनू भाग - २

पुस्तक प्राप्ति हेतु सम्पर्क : बी-३०१, मंगलम् जागृति रेसीडेंसी, ४४७ कृपलानी मार्ग आदर्श नगर, जयपुर (राज.

मूल्य ३०/-

मन की रानी छतरी में पानी

सुधा भार्गव की ६ रोचक बाल कथाएँ

प्रकाशन - सिद्धार्थ बुक्स

सी २६३ए, गली नं. ९, हरदेवपुरी, शाहदरा दिल्ली ९३

मूल्य १००/-

बच्चों की बातें

प्रसिद्ध कवि एवं व्यंग्यकार सुभाष काबरा की बालमन की १०० से अधिक चुटीली नई कविताएँ

संपर्क- बी-८, खत्री अपार्टमेंट स्कूल रोड़, मलाड़ (पं.) मुम्बई

मूल्य ४०/-

भ्रमर

अवधेश सोलंकी के २१ बाल गीतों का लुभावना संग्रह

प्रकाशन - जनवाणी प्रकाशन प्रा.लि.

३०/३५, गली नं. ९, विश्वास नगर, दिल्ली ३२

मूल्य १००/-

अपना बचपन बड़ा निराला

डॉ. वन्दना गुप्ता की ५१ बाल कविताएं जो सजी हैं अलग अलग बच्चों के बनाए सुन्दर चित्रों से

प्रकाशक - शिवराम जनकल्याण सेवा समिति

शिवराम शिशु चिकित्सालय, मोती नगर वार्ड, सागर(म.प्र.) ४७०००२

मूल्य २०/-

प्यारी गौरैया

सुरेश सौरभ की सचित्र १० बाल कविताएँ

प्रकाशन - पुष्पांजली प्रकाशन

हाथीपुर उत्तरी निर्मल सागर, लखीमपुर, खीरी (उ.प्र.)

मूल्य ८०/-

छुटकी की चुटकी

प्रसिद्ध बालकवि डॉ. आर.पी. सारस्वत की चित्रमय २५ बाल कविताएँ

प्रकाशक - नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास

२४५, नया आवास विकास, सहारनपुर (उ.प्र.)

मूल्य १२५/-

मम्मी मुझे बना दो सैनिक

विख्यात बाल साहित्य डॉ. रोहिताश्व अस्थाना की राष्ट्रीयता एवं मनोरंजन से भरपूर २० मनभावन बाल कविताएँ।

प्रकाशन - यश पब्लिकेशन्स

जे १९०१/जे, १९०२ रहेजा विस्टा, चांदीवली, मुम्बई ४०००७२ (महा.)

भवालकर कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत

बाल प्रस्तुति

बस झूठ नहीं

कहानी : समृद्धि श्रीवास्तव

छुट्टी का दिन था। मुहल्ले के कुछ दोस्त सुभाष, राजेन्द्र, राकेश और विवेक घूमने के लिए निकल पड़े। रास्ते में उन्हें संतरों का एक बड़ा बगीचा दिखलाई पड़ा। सुभाष ने जब बगीचे में संतरे लगे देखे तो उसके मुँह में पानी आ गया वह बोला–''राजेन्द्र, क्यों न इस बगीचे से संतरे तोड़े जाएँ?''

''तुम्हें पता है बगीचे में रखवाली करने के लिए कोई न कोई व्यक्ति जरुर रहता है।'' विवेक ने अपने मन की बात कही। तभी राकेश भी कहने लगा– ''कोई व्यक्ति भले बगीचे की रखवाली कर रहा हो। हम लोग तो चुपचाप पेड़ों पर चढ़ जाएंगे, किसी को कानों कान पता नहीं चलेगा''

''एक तुम्हीं तो होशियार हो, बाकी सब मूर्ख हैं। कैसे पता नहीं चलेगा? जैसे ही बगीचे में जाओगे वैसे ही रखवाली करने वाला चौकीदार सजग हो जाता है।'' राजेन्द्र सबको समझाया। मना करने पर भी सुभाष, राकेश और विवेक संतरो के बगीचे में घुस गए। वे पेड़ों से संतरे तोड़ने लगे। अभी उन्होंने दो–तीन संतरे ही तोड़े थे। तभी बगीचे का चौकीदार अपने कुत्ते के साथ आ पहुँचा। राजेन्द्र बगीचे के बाहर ही रुक गया था। वह बोला–''जैसे ही कुछ खटपट होगी या कोई आता हुआ नजर आएगा मैं सीटी बजाकर इशारा कर दूँगा।'' राजेन्द्र ने दो–तीन बार अपने दोस्तों को इशारा भी किया, पर वे नहीं समझे। पेड़ों पर ही बने रहे।

जब चौकीदार पेड़ों के पास आ गया और कुत्ता भी जोर–जोर से भौंकने लगा। तभी राकेश और सुभाष पेड़ से उतरे और बगीचे से बाहर निकल आए। चौकीदार उन्हें नहीं पकड़ सका, लेकिन विवेक को पेड़ से उतरने में दिक्कत हो रही थी। वह पेड़ से कूद पड़ा। विवेक के पैर में चोट लग गई। खून भी निकल आया। किसी तरह राजेन्द्र, राकेश और सुभाष ने उसे बगीचे से बाहर लाने का प्रयास किया। वे प्रयास में

सफल भी हो गए। नहीं तो विवेक को बगीचे का चौकीदार संतरों की चोरी में रंगे हाथों पकड़ लेता। विवेक को डॉक्टर के यहाँ ले जाकर दोस्तों ने मरहमपट्टी करवाई। पट्टी बांधकर जब विवेक घर पहुँचा तो उसके पिताजी बोले– ''बेटा ये क्या है? सुबह तो तुम्हारे पैर में कोई पट्टी नहीं थी। अभी पट्टी बंधी है। क्या बात हो गई?''

''हाँ पिताजी! मैं स्कूटर की टक्कर से गिर पड़ा था। इसलिए चोट लग गई है। ज्यादा नहीं है, आप परेशान न हों। मेरे दोस्तों ने डाक्टर साहब को दिखा दिया है।'' विवेक ने साधारण अंदाज में जवाब दिया।

शाम को विवेक के पिताजी जब घूमने निकले तो उनके दोस्त मिश्रा जी ने उन्हें बताया– ''कुछ लड़के दोपहर में लक्ष्मी सेठ के बगीचे से बाहर आ रहे थे। आपका पुत्र विवेक भी था, क्या आपने उसे भेजा था?''

विवेक के पिताजी सारा माजरा समझ गए। वे बोले– ''नहीं, मैंने तो नहीं भेजा था। ऐसे ही दोस्तों के साथ गया होगा।''

घर जाकर जब विवेक से सच सच बतलाने को कहा गया। तब उसने माता–पिता के समझ सारी बात साफ–साफ बतला दी। पिताजी इतना ही बोले– ''बेटे जिन्दगी में कभी झूठ का सहारा नहीं लेना। शरारतें तो मैंने भी खूब की हैं। पर सदा सच बोलकर। फिर चोरी केवल शरारत नहीं एक बहुत बुरी आदत है बेटा!'' विवेक बोला– ''माफ कीजिए पिताजी! अब मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा। मैंने आपसे झूठ बोला, दोस्तों के साथ चोरी करने में साथी बना। मुझे माफ कर दीजिए।.....मुझे माफ कर दीजिए।

विवेक के पिताजी ने विवेक को माफ कर दिया।

● ग्वालियर (म.प्र.)

आपकी पाती

देवपुत्र का अगस्त माह का अंक बहुत अच्छा लगा इस अंक में वीरान जंगल, परोपकारी कौआ, रजकण माथे का चंदन, वर्षा आई, लप्पू सेठ, चित्रकथा, आजादी, राम की राखियाँ आदि हमें बहुत अच्छी लगी इससे हमें बहुत सारी जानकारी मिली। देवपुत्र को हम सपरिवार पढ़ते हैं और मेहमानों को भी पढने का आग्रह करते हैं।

बलराम पाटीदार, कलालिया (म.प्र.)

देवपुत्र का अगस्त माह का अंक बहुत अच्छा लगा इस अंक में ताकतवर कौन, चुटकुले, आलस्य का परिणाम, कान्हा तेरे किनते नाम यह हमें बहुत अच्छी लगी।

दीपा करमाकर, बालक राजा आदि कहानियाँ हमें बहुत अच्छी लगी। देवपुत्र से हमें बहुत सारी जानकारी प्राप्त हुई। देवपुत्र को हमारे पुरे परिवार वाले पढते हैं। देवपुत्र हमारे लिए प्रेरणादायी है।

दीपक चौधरी, कलालिया (म.प्र.)

देवपुत्र का सितम्बर अंक भी स्तरीय एवं प्रशंसनीय है। भैया – बहिनों को सुसंस्कारित करने हेतु आपका प्रयास सेतु है। जो अविराम तथा अभिराम भी है। पत्रिका यह सिद्ध करती है कि अपनी रचना की लोकप्रियता ही रचनाकार का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

राजा चौरसिया, कटनी (म.प्र.)

देवपुत्र का सितम्बर अंक। प्यारी भाषा के मुख पृष्ठ ने मन मोह लिया। आपके दिशा निर्देश में हिन्दी दिवस और राष्ट्रीयता को नई कल्पना और सूझबूझ से हर रचना में पुष्पांकित किया फूलों से संवारा है। अंक की चित्र सज्जा के चित्रकार को विशेष बधाई देना चाहूंगी।

मुझे, अंक की कहानियों में लोककथाएँ, उनका आधार पड़कर विशेष प्रसन्नता हुई। सुखद है कि बाल प्रस्तुतियाँ अपनी रचनाएं घर और उसके रिश्तों से जुड़ रही है। खास मौर पर 'माँ लौट आई कहानी' इसलिए प्रभावित करती है कि उसमें स्त्री का घर बोलता है। घर मालिक के साथ।

इस बार का यह अंक तो हाथ से छूटा ही नहीं। जब तक पूरा नहीं हो गया। एक बार फिर आप सभी को अभिनंदनीय बधाई।

मालती शर्मा 'गोपिका', पुणे (महा.)

ऐसे आए पेड़ पौधे

कहानी : मनोहर चमोली 'मनु'

बहुत पुरानी बात है। तब धरती पर दो ही पेड़ उगा करते थे। एक पेड़ पर जलेबी लगती। दूसरे पेड़ पर गुलाब जामुन लटकते थे। एक दिन की बात है। पहला पेड़ बोला–''ये हवा भी किसी काम की नहीं है। हव के कारण मेरी टहनियों से जलेबियां गिर जाती हैं। मजेदार बात यह है कि जितनी जलेबियां नीचे गिरती हैं, उससे अधिक झट से उग आती हैं। रस से भरी जलेबियां का वजन सहते–सहते मैं थक जाता हूं। मेरी नन्हीं शाखाएं भी उदास हो जाती हैं।''

दूसरा पेड़ा बोला–''ठीक कहते हो। मुझे ही देखो। हवा के कारण मेरे गुलाब जामुन भी गिर जाते है। मेरे गुलाब जामुन तो बहुत ही नाजुक हैं। हवा हमारे किसी काम की नहीं है। हवा उनकी बातें सुन रही थी। वह नाराज हो गई और चुपचाप जाकर कहीं सो गई। जल्दी ही हवा की नाराजगी से धरती में खलबली मच गई। दिन और गरम होने लगे। पशु–पक्षी नहाते तो उनके बदन का पानी तक न सूखता। दिन में गरमी होने से सभी पानी अधिक पीने लगे। नदी तालाब सूखने लगे।

दोनों पेड़ों के पत्ते झुलसने लगे। सूरज ने

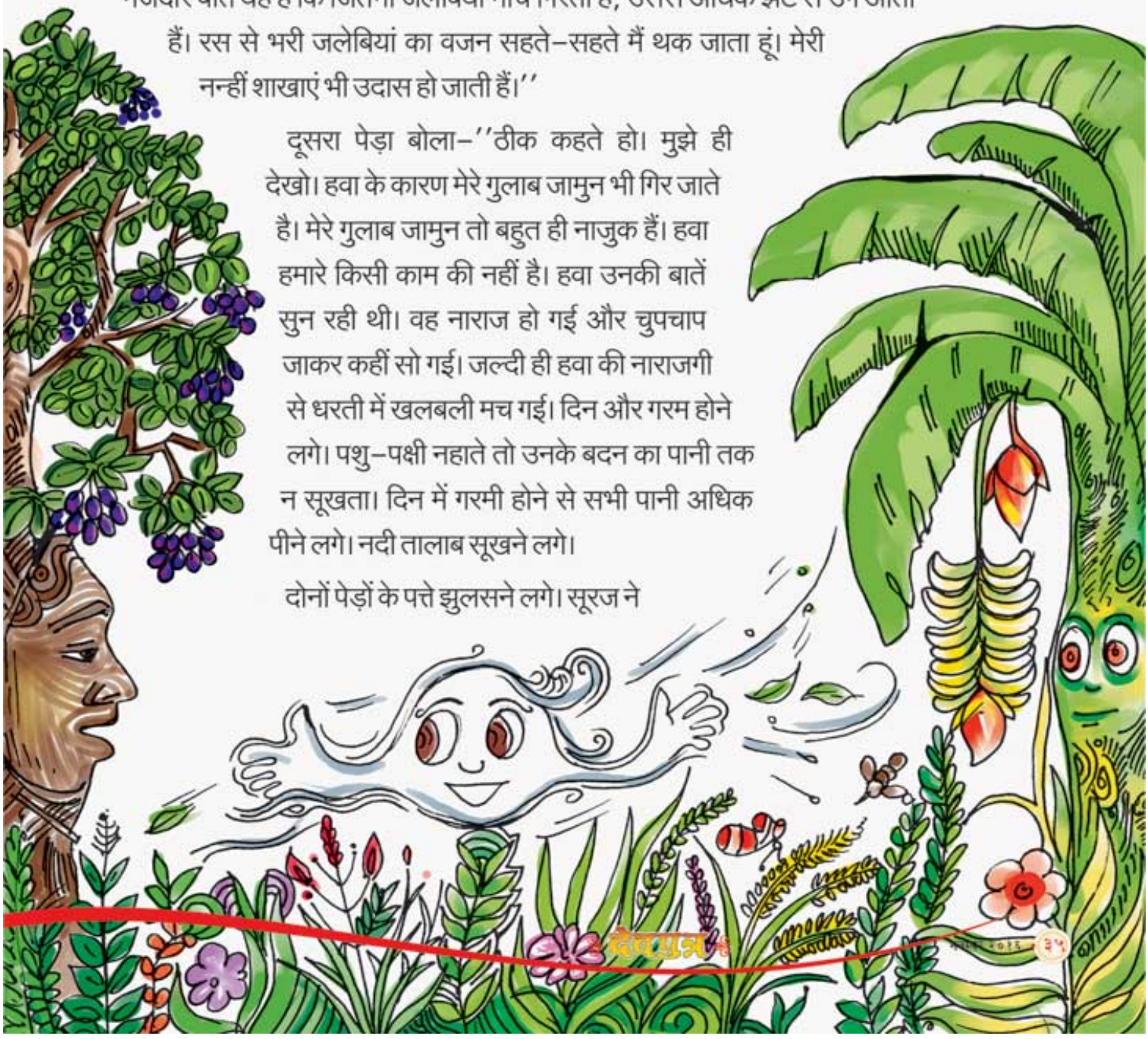

हवा को मनाने की कोशिश की। हवा ने शर्त रखी–''दोनों पेड़ों को सजा मिलनी चाहिए।'' सूरज ने कहा–''जैसा कहोगी, वैसा ही होगा। पहले तुम अपनी नाराजगी तो दूर करो। फिर से बहो।'' हवा बहने लगी तो सब कुछ ठीक हो गया। सब खुश हो गए। हवा को अपनी ओर आता देख पहला पेड़ चौंका। हवा ने कहा–''अब तुझ पर कभी जलेबियां नहीं आएँगी। केवल फल आएंगे। वह गोल नहीं लम्बे होंगे और वह देर से पकेंगे।'' यह क्या! पल भर में पेड़ केले का पेड़ हो गया।

अब हवा दूसरे पेड़ के पास पहुँची ओर बोली–''तेरे नाजुक गुलाब जामुन कठोर हो जाएंगे। इतने कठोर कि खाने से पहले उन्हें फोड़ना होगा।'' तब वे जामुन का पेड़ अखरोट का पेड़ हो गया। हवा अपने संग कई बीज उड़ा कर लाई थी। उसने वह बीज धरती पर बिखेर दिए। हवा ने कहा– ''अब धरती सैकड़ों पेड़–पौधों से हरी भरी हो जाएगी। खट्टे–मीठे–कड़वे फल भी लगेंगे।'' पलक झपकते ही धरती में सैकड़ों तरह के पेड़–पौधे उग आए। हर मौसम में अलग–अलग स्वाद के फल उगने लगे। बाद में इंसानों ने धरती में गिरी जलेबियाँ और गुलाब जामुन को देखकर उन्हें बनाना भी सीख लिया।

कविता बनाइए २३

बच्चो !
दिए गए चित्र पर सुन्दर-सी चार पंक्तियों की कविता बनाकर भेजिए।
चयनित कविता जनवरी २०१७ के अंक में प्रकाशित की जाएगी।

नैना बिटिया

कविता : शादाब आलम

नैना बिटिया शिक्षक बनकर
छड़ी लिए चलती है तनकर।
टेढ़ी-मेढ़ी, नई-नवेली
बूझा करती कई पहेली।
कहती उत्तर अभी बताओ
वरना फिर मुर्गा बन जाओ।
भैया चक्कर में पड़ जाता
बगले झाँके, सिर खुजलाता।

झूठमूठ गुस्से में आकर,
बापू से बोले, नखराकर
कहो कहानी नई-निराली
जिसको सुन मैं पीटूँ ताली
किस्सा मन का अगर हुआ ना
घोड़ा बनकर मुझे घुमाना।

आँखें अपनी मसल-मसलकर,
कहती माँ से मचल-मचलकर
इक प्यारी-सी लोरी गा दो
मीठे-मीठे सपने ला दो
लोरी अच्छे ना गाई तो
निन्नी मुझको ना आई तो
ऊँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ मैं रोऊँगी
सच कहती हूँ ना सोऊँगी।

● नोएडा (उ.प्र.)

बनाओ सजाओ • कागज की टोकरी •

• राजेश गुजर

• सामान – स्टील या प्लास्टिक का कटोरा, अखबार या कोई भी रद्दी कागज, गोंद, पानी एवं रंग-ब्रश।

1. सबसे पहले कागज के टुकड़ों को पानी में भिगोकर कटोरे के बाहर चिपकाते जाइए। पूरे बर्तन पर एक परत बन जाएगी।

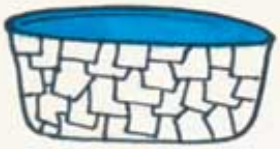

2. अब इन टुकड़ों के ऊपर कागज के टुकड़े गोंद से चिपकाइए। कागज की परत हर तरफ एक समान मोटी होनी चाहिए।

3. पूरी तरह से सूख जाने के बाद कागज के बर्तन को धीरे से खींचिए और कटोरे को बाहर निकालें।

4. अब कागज से बना कटोरा तैयार है, इस पर मनचाहे रंगों से सजाकर इस के दोनों ओर धागे या मोटे कागज की लंबी पट्टी काटकर चित्रानुसार चिपका दें। यह बास्केट जैसी बन जाएगा।

इसमें फूलों को रखकर फ्लॉवर पॉट जैसा उपयोग करें।

• महेश्वर (म.प्र.)

मेरा काम

कविता : विमला जोशी

सुबह उठूं उन्हें करूं प्रणाम
मेरे मात-पिता, भगवान,
जीवन मुझे दिया है जिसने
करूँ मैं नित उनका सम्मान।

ईश्वर से माँगू वरदान,
दे दो बुद्धि बनूं बलवान,
इस धरती में भेजा तुमने
करूं काम मैं रक्खूं मान।

फर्ज निभाऊँ बनूं इंसान,
माता-पिता का रक्खूं मान,
धरती माँ का पुत्र कहाऊँ
और बढाऊं इसकी शान।

● हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

|| बाल प्रस्तुति ||

पहेलियाँ

● अमित थवाईत

छोटी दुम, लंबी है गर्दन
भगे रेत में करता मर्दन।

मैक मिलन ने युक्ति बनाई
दो पहियों पर सैर कराई।

काला घोड़ा, गोरी सवारी
एक के बाद एक की बारी।

पेट में अंगुली, सिर पर पत्थर
झटपट बताओ इसका उत्तर।

हरा चबूतरा लाल मकान
उसमें बैठा कल्लू राम।

● बिर्रा (छ.ग.)

(उत्तर इसी अंक में)

कुछ माँ बाप इतराते हैं

कविता : डॉ. मधुसूदन चौबे

एनरॉयड मोबाईल पर जाने कौनसे एप्स चलाते हैं?
आजकल बच्चे वक्त से बहुत पहले बड़े हो जाते हैं।

डब्ल्यू डब्ल्यू एफ के खली की दहाड़ के दीवाने हुए
दादा-दादी, नाना-नानी के किस्से उन्हें उबाते हैं।।

कोई हेरी पॉटर है जो सपनों में भी रहता है साथ
अमर चित्रकथाओं को बच्चे बड़ी बकवास बताते है।।

गिल्ली-डंडा और सितोलिया संग्रहालय में चले गए
मोटा चश्मा पहन बच्चे कम्प्यूटर पे जोर अजमाते हैं।।

मोबाईल कैसा भी हो चला लेते हैं मेरे बच्चे 'मधु'
औलाद की इस खूबी पर कुछ माता-पिता इतराते हैं।।

● बड़वानी (म.प्र.)

आगरा (उ.प्र.) में महन्त स्व. गणेशराम जी नागर की स्मृति में उनके परिजनों द्वारा विद्या भारती को बालिका विद्यालय के निमित्त प्रदत्त भूखण्ड के लोकार्पण प्रसंग पर पू. सरसंघचालक श्री मोहनराव जी भागवत के साथ विद्या भारती के राष्ट्रीय मंत्री एवं देवपुत्र का संचालन करने वाले सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष श्री यतीन्द्र जी शर्मा अन्य वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के साथ।

दिमागी कसरत

इन महापुरुषों को पहचानिए

इन डाक टिकटों का आपस में क्या सम्बन्ध है ?

जोड़ो

निम्नलिखित अंकों को सावधानी से जोड़ कर इनका कुल योग बताएं।

आइवर यूशिएल

(उत्तर इसी अंक में)

कंदरा

कहानी : रघुराजसिंह 'कर्मयोगी'

चम्बल नदी के पानी में सैकड़ों मछलियां निवास करती थीं। उनमें से सीता और गीता में अभिन्न मित्रता थी। नदी की एक कंदरा में चैन से रहने के लिए सीता ने घर बना रखा था। वह उसमें रात को आराम से सोती। गीता का जब भी मन होता सीता के पास आ जाती। इसी तरह सीता भी गीता के पास चली जाती। वे घंटों बातें करती रहतीं। समय का उन्हें ध्यान ही नहीं रहता। पानी में दोनों एक दूसरे के साथ खूब मस्ती करतीं।

सीता गीता से छोटी थी। गीता को वह दीदी कहकर सम्बोधित करती। मगर वह थी बहुत चंचल। इसलिए गीता उसका विशेष ध्यान रखती। शरारती होने से कारण सीता कहीं भी निकल जाती। गीता चिन्तित हो जाती।

''मेरी प्रिय सखी सीता! गहरे पानी में मत जाया कर। वहाँ सार्क, पापलेट और बाम जैसी बड़ी-बड़ी मछलियां रहती हैं। वे तुम्हें नाश्ते की प्लेट में रखे आलू के पराठे की तरह खा जाएंगी। तू चाहकर भी अपना बचाव नहीं कर पाएगी। फिर मुझ से मत कहना कि समय से चेताया नहीं था। ''गीता ने समझाते हुए कहा।

''फिर मैं क्या करूँ? गहरे पानी में जाने पर बड़ी मछलियाँ निवाला बना लेंगी। नदी किनारे मगरमच्छ का भय है। वह आँखें बंद कर साँस रोके घात लगाकर पड़ा रहता है। भालुओं, जंगली कुत्ते और ऊदबिलावों को जंगल में शिकार न मिले तो वे भी नदी की तरफ चले आते हैं। मछलियों को पेट में जिन्दा ही उतार लेते हैं। इनसे बचे तो एक टाँग पर तपस्या करता हुआ बगुला भगत मिल जाएगा। जरा सी चूक हुई कि गड़प से निगल जाता है। डकार तक नहीं लेता।'' कहते हुए सीता की आँखों में आँसू निकल आए।

''तू ज्यादा मत सोच। दिमाग पर लेगी तो तेरा रक्तचाप बढ़ जाएगा। अरी, आदमी क्या कम है? वह में कढ़ाई में चटपटा तल कर चटखारे ले-ले कर खाता है। इसलिए अब उथले पानी की तरफ चलते हैं। ठंडी कुछ ज्यादा है। कुनकुनी धूप सेकने का मजा लेंगे। फिर सोचेंगे क्या करना है?''

''यही उचित रहेगा। मेरा मन भी कसैला हो रहा है। धूप की गर्मी से शरीर की अकड़न कुछ कम हो जाएगी और मन भी बहल जाएगा।''

दोनों सहेलियां नदी किनारे पहुँची तो अजीब दृश्य दिखाई दिया। जिसकी उन्हें कल्पना तक नहीं थी। कई चूहे कतारबद्ध हाथों में तलवार लहराते हुए दौड़े चले जा रहे थे। गीता ने पूछ लिया-''भैया, तेज कदमों से दौड़ लगाते हुए कहां भाग चले?''

उनमें से एक मोटा सा चूहा जो शायद उनका सरदार रहा होगा बोला-''हिरन की लड़की को सियार उठा ले गया है और नाम हमारा आ रहा है। थाने में हमारे नाम से उन्होंने शिकायत दर्ज करवा दी है। हम हिरनों को छोड़ने वाले नहीं है। अभी जाकर उन्हें छठी का दूध याद दिला देंगे।''

दोनों मछलियां, चूहों की बातें सुन कर खूब हँसी। हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गए। मगर हँसी थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। इस घटना से तनाव थोड़ा कम हुआ। दिमाग शांत हुआ तो वहीं विश्राम करने लगी। इसके बाद दोनों

अपने–अपने निवास स्थानों को प्रस्थान कर गईं।

कुछ समय बाद सीता को भूख सताने लगी। मगर कंदरा से बाहर निकलने का साहस नहीं जुटा पा रही थी। शिकारियों का डर उसके मन में गहरे से बैठ गया। फिर भी दिल कड़ा कर कंदरा से बाहर निकल आई। वह थोड़ा सा आगे बढ़ी ही थी कि सामने से फन फैलाए एक साँप दिखाई दिया। जो उसे खा जाने की ताक में बैठा था। सीता सिर पर पैर रखकर भाग ली। पुनः कंदरा में आ कर घुस गई। उसका दिल तेज–तेज धड़क रहा था।

कई दिन हो गए। मुलाकात का सिलसिला बाधित हुआ तो गीता चिन्तित हुई। सोचा चलकर देखूँ। सीता मिलने क्यों नहीं आई? कंदरा में जाकर देखा तो पता चला कि सीता कंदरा में सिमटी–सिकुड़ी सी पड़ी है।

''क्या बात है, सखी? महाभारत युद्ध के अन्तिम चरण में जिस प्रकार भीम के भय से दुर्योधन ने अपने एक जलाशय में बंद कर लिया था। उसी तरह अपने आपको तुमने इस कंदरा में बंद कर लिया है। डर मत। मैं आ गई हूँ। बाहर निकल कर देख, संसार बहुत सुन्दर है''–गीता ने कहा। वह रजनी गंधा का फूल लेती आई थी। मुस्कराते हुए सफेद फूल सीता को दिया तो चेहरे पर हल्की सी हँसी की एक रेखा खींच गई।

इसके बाद झींगा, केकड़ा, सीपी, शंख, कछुआ को पता चला तो वह सब आ गए। झींगा कहने लगा– ''सीता बहन, हम जल के जीवों को प्राणों का संकट तो सदैव बना रहता है। शहरों को देख लो। इंसान ने अनगिनत उद्योग–धंधे और कारखाने लगा रखी हैं। जिनका गंदा और विषैला पानी पानी को हम विवश हैं। वह पानी उपचार करके नदियों में डालना चाहिए। दूषित पानी से हमें कई प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं। फलस्वरूप हमारे परिजन असमय ही काल के गाल में समा जाते हैं।''

''सच यही है भैया। इंसान शेर से भी खूंखार जानवर है। वह अत्यंत स्वार्थी है। अपने सुख आराम, वैभव, यश, शौर्य और कीर्ति के बारे में सोचता है। जीवों और जानवरों से उसे क्या लेना–देना।''– गीता बोली। जो उपस्थितों की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी।

''दीदी, एक बात मेरे मस्तिष्क में कुलबुला रही हैं। आपने सुना होगा मित्रो! शेर सदैव समूह में एक साथ रहते हैं। शिकार पर हमला भी मिलकर ही करते हैं उन की तरह हम भी बड़े समूह में साथ–साथ निकला करेंगे। किसी शार्क, फणीधर या बगुलों में हमारा शिकार करने का साहस न होगा''– सीता ने राय प्रकट की।

गीता को उसकी बात जम गई। उसने घूम–घूम कर समूह में रहने का संदेश सजातीय बंधुओं को दिया और उन्हें संगठित किया। सीता और गीता को कहीं जाना होता तो मछलियों के समूह में एक साथ घर से निकलतीं। किसी भी जानवर या जीव का उनकी तरफ नजर उठाकर देखने का साहस न होता। शिकार करना तो बहुत दूर की बात है। एकता में बहुत शक्ति है। एक रहेंगे तो कोई भी हमारी तरफ कुदृष्टि डालने का साहस नहीं करेगा।

● डडवाड़ा (राज.)

बाल दिवस का उपहार

चित्रकथा - देवांशु वत्स

कहानी : डॉ. शशि गोयल

कैसी रही

जंगल के राजा को भूख लगी। लगती क्यों नहीं, सारा दिन लम्बी नींद लेने के बाद उठ कर आया था फिर पहले दिन आधा हिरन ही तो खाया था। गुफा से बाहर निकल कर आया। सूरज डूबने लगा था सब पक्षी और पशु अपने अपने घरोंदों में लौटने लगे थे। सिंह ने इधर-उधर देखा, कहीं कोई नजर नहीं आ रहा था, पेट था कि कुलकुबाए जा रहा था। दूर पर एक छोटा सा खरगोश झाड़ियों के पास बैठा कुतर-कुतर गाजर खा रहा था। था तो छोटा सा पर था बड़ा चालाक, खाते-खाते उसने सिंह को देख तो लिया था पर लालच, साचा देखूँ इसके इरादे क्या है। शेर कुछ देर इधर उधर देखता रहा फिर सोच चलो जरा मुँह का जायका ही बदला जाए। जरा एक कौर ही सही पर कुछ तो पेट में जाएगा जो कुछ भी पड़ेगा गुन ही करेगा। वह खरगोश की ओर बढ़ा कि खरगोश कुलाचें भर कर भाग लिया।

अच्छा यह मजाल, मुझसे क्या खाकर बचेगा क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा? अभी मजा चखता हूँ। वह भी खरगोश के पीछे भाग लिया। अब आगे आगे खरगोश पीछे पीछे सिंह। खरगोश के बीस कदम और सिंह की एक छलांग धीरे-धीरे फासला कम होता गया। कम होते होते एक मोड़ पर खरगोश ने देखा रास्ता आगे बड़ा मुश्किल है। चढ़ने में तो बहुत देर लगेगी और चट्टान हैं कि उभरी हुई उसके आगे रास्ता है नहीं। अब तो बच नहीं पाएगा। उस समय अपना सारा खानदान याद आने लगा। मन ही मन मनाने लगा एकदम से हाथी ही आ जाए वह ही उसे सूंड में लपेट कर पीठ पर बिठा ले। हे राम! कहकर ऊपर देखा उभरी चट्टान दिखाई दी बस आ गई तरकीब दिमाग में, अगर चाल चल गई तो चल गई नहीं तो मरना तो है ही।

खरगोन झट चट्टान को थाम कर खड़ा हो गया और लगा शोर मचाने अरे कोई आइओ रे! दौड़ियो रे! हम सब मरे हम सब मरे। कौन है सिंह भैया! जरा सहारा लगवाओ पहाड़ गिर रहा है। अरे थामो थामो जल्दी थामो, गिरी, हम दोनों मरे...छूटी छूटी।'' हड़बड़ाहट में सिंह भूल गया कि वह खरगोश को खाने के लिए पीछा कर रहा था, उसने झट से चट्टान को पकड़ लिया।

खरगोश ने लम्बी सांस ली जैसे कितना बोझ सिर से हटा हो। हाथ झटके और बोला, ''जरा पकड़े रहो सिंह भैया! बस और लोगों को लेकर मैं भी अभी आता हूँ!'' खरगोश ने अपनी दुम दबाई और भाग लिया।

अब सिंह असमंजस में चट्टान छोड़ता है तो सिर पर गिरेगी, पकड़े रहे तो कब तक। इंतजार करने लगा कोई आए तो वह उसे पकड़ाए। पता नहीं यह खरगोश कितनी देर से सहायता लेकर आएगा, उसकी भूख के मारे जान निकली जा रही थी। सिंह सारी रात चट्टान पकड़े खड़ा रहा। भूख प्यास से निढाल उसने सोचा मौत तो भूख से भी हो जाएगी, छोड़कर एक तरफ सरका और कूद कर उस चट्टान के पास से हटा। पर यह क्या चट्टान तो गिरी ही नहीं।वह कुछ देर तक उसे घूरता रहा कि अब गिरे तब गिरे, पर वह गिरी ही नही। अब उसकी समझ में आई कि खरगोश उसे बेवकूफ बना गया और तब से शेर खरगोश का पक्का दुश्मन बन गया है। उसे पकड़ने की फिराक में रहता है और खरगोश भी उसे उल्लू बनाने के नए तरीके ढूंढता रहता है।

● आगरा (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ ५०

राष्ट्रधर्म (मासिक)

(नवम्बर २०१६)

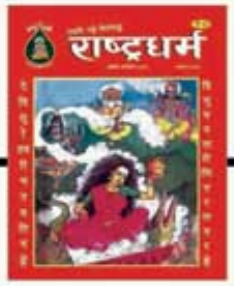

(दीपावली के पावन-पर्व पर प्रकाश्य)

नमामि गङ्गे विशेषाङ्क

पतितपावनी, पापनाशिनी, मोक्षदायिनी, त्रिपथगामिनी गङ्गा जी की महिमा अपरम्पार है। 'गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि' जो सौ योजन की दूरी से भी माँ गङ्गा का स्मरण करता है, उसके समस्त पापों का तत्काल प्रक्षालन हो जाता है। देश–विदेश में बसे हिन्दू मात्र के लिए ही नहीं, कतिपय विदेशी विशेषकर यूरोप, अमेरिका और रूस के हिन्दू से इतर निवासी, भी गङ्गा जी के प्रति किसी हिन्दू से कम श्रद्धा, आस्था नहीं रखते। हरिद्वार, प्रयागराज, काशी जैसे धर्मप्रधान नगरों में बहुधा दिखनेवाले दृश्य इसकी पुष्टि करते हैं। कार्त्तिकी पूर्णिमा, माघ मास के कल्पवास, मकर–संक्रान्ति पर गङ्गासागर स्नान, गङ्गा दशहरा जैसे पर्वों पर लगनेवाले मेले तथा प्रयागराज व हरिद्वार के कुम्भ मेलों में लाखों की संख्या में उमड़ते जन–समुद्र न जाने कब से इस महिमा का प्रत्यक्ष बखान करते आ रहे हैं। गङ्गा जी का महिमा–गान करते अगणित स्तोत्र और काव्य जन–जन के कण्ठहार हैं। 'औषधं जाह्नवीतोयम्' उक्ति इसके पवित्र–जल की स्वास्थ्यरक्षिणी, स्वास्थ्यवर्द्धिनी, रोगनिवारिणी शक्ति का प्रतीक है। गङ्गा के उपनाम से प्रचलित कितनी नदियाँ हैं देश में, और विदेश में भी, यह ज्ञातव्य है। गङ्गा हमारी सांस्कृतिक विचार–सम्पदा की अजङ्ग–धारा है। गङ्गा–यमुना की अन्तर्वेदी विश्व की सबसे उर्वरा भूमि मानी जाती है। गङ्गा का मैदान अन्नपूर्णा का क्रीडाङ्गन है।

ऐसे सभी आयामों पर इस विशेषाङ्क में दुर्लभ सामग्री का संयोजन साकार होगा। अधिकारी विद्वानों के विचारों, आलेखों व 4 बहुरंगे आकर्षक चित्रों से समन्वित इस विशेषाङ्क को आप पूर्व प्रकाशित विशेषाङ्कों की भाँति ही सँजोकर रखने के आकांक्षी होंगे।

विशेष सम्पर्क

१. अभिकर्त्ता/पाठक-बन्धु अपनी सम्भावित बढ़ी हुई माँग से ५ अक्तूबर, २०१६ तक कृपया अवश्य सूचित करने का कष्ट करें।

२. विज्ञापनदाता बन्धु-कृपया ५ अक्तूबर, २०१६ तक अपना विज्ञापन भेजकर हार्दिक सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

प्रबन्धक राष्ट्रधर्म 'मासिक'

संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–२२६ ००४

दूरभाष : (०५२२) ४०४१४६४ (सम्पादकीय), २६६१३८४, २६६१३५८ (व्यवस्था)

E-mail : mgr.rdm.1947@gmail.com, editor_rdm_1947@rediffmail.com

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) ध्रुव (२) प्रल्हाद (३) कृष्ण (४) गोबिन्दराय (५) शिवाजी .
(६) छबीली (लक्ष्मीबाई) (७) मैना (८) लता मंगेशकर (९) मीरा (१०) इन्दू (इंदिरा)

शब्दक्रीड़ा

हमारे महापुरुष

(१) नागार्जुन - वैज्ञानिक
(२) रवि वर्मा - चित्रकार
(३) शालिवाहन - राजा
(४) तिरूवल्लुवर - संत
(५) बाल गंगाधर तिलक - राजनेता
(६) कालिदास - कवि
(७) बैजूबावरा - संगीतकार
(८) गुरु नानक देव - पंथ प्रवर्तक
(९) मंगल पाण्डे - स्वतंत्रता सेनानी
(१०) नारायण गुरु - समाज सुधारक

जानो पहचानो

महात्मा ज्योतिबा फुले

षट्भुजा

षट्भुजा ०७ का उत्तर

बिन्दु मिलाएं

यदि आप जानना चाहते हैं कि इस चित्र में कौन सा पक्षी छिपा है तो बिन्दु १ से ४७ तक मिलाएं। वह स्वतः ही सामने आ जाएगा।

चिड़िया

कविता : राधिका पाठक

ची. चीं करती आई चिड़िया
सबके मन को भाई चिड़िया
रंग बिरंगे पंख मनोहर
आसमान में छाई चिड़िया

● आगर मालवा

पौधा किससे कौन बड़ा?

४,९,७,५,१०,२,३,६,८,१

पहेलियाँ

ऊँट, सायकिल, तवा और रोटी, अंगूठी, तरबूज

दिमागी कसरत

* (१) कबीर (२) माखनलाल चतुर्वेदी (३) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
* जोड़ो - ३१८
* सभी डाकटिकिट बाल दिवस पर केन्द्रित है।

राजकुमार जैन 'राजन' 'साहित्य श्री' एवं 'डॉ. हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य सम्मान' से सम्मानित

आकोला। भारतेंदु हरिशचन्द्र जयंती पर 'श्री भारतेन्दु समिति' लाडपुरा, कोटा द्वारा ९ सितम्बर २०१६ को कोटा में आयोजित भव्य समारोह में प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी श्री राजकुमार जैन 'राजन' आकोला (राज.) को 'साहित्य श्री' सम्मान से नवाजा गया।

११ सितम्बर को श्री राजकुमार जैन 'राजन को बाल साहित्य लेखन, संपादन, प्रकाशन सहित बाल कल्याण एवं बाल साहित्य उन्नयन के क्षेत्र में विश्वव्यापी उत्कृष्ठ योगदान के लिए प्रतिष्ठित सम्मान 'डॉ. हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य सम्मान २०१६ ' से सम्मानित किया। सम्मान स्वरूप अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।'

बाल साहित्य सृजनपीठ संस्कृति परिषद म.प्र.शासन द्वारा कहानी सृजन कार्यशाल समपन्न

जबलपुर। दिनांक ६ अक्टूबर २०१६ को सरस्वती उ.मा. विद्यालय अधारताल, जबलपुर के सभागार में बाल साहितय सृजनपीठ संस्कृति परिषद् म.प्र.शासन के तत्वावधान में कहानी सृजन कार्यशाला आयोजित की गई। यह कहानी सृजन कार्यशाला तीन भागों में आयोजित हुई। उद्घाटन सत्र में संस्था के व्यवस्थापक डॉ. अशोक कुमार भौमिक की अध्यक्षता एवं देवपुत्र के प्रबंध सम्पादक डॉ. विकास दवे के मुख्य अतिथ्य एवं श्रीकांत जी मिश्र के विशिष्ठ आतिथ्य में सम्पन्न हुई। साथ ही श्री राजेन्द्र जी मिश्र प्राचार्य गंगानगर की सहभागिता भी रही। प्रथम सत्र में डॉ. विकास दवे द्वारा भैया बहिनों को कहानी लेखन शैली एवं कहानी लेखन की कला पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

द्वितीय सत्र रचनाकर्म पर केन्द्रित रहा जिसमें भैया बहिनों द्वारा कहानी लेखन किया गया। जिसमें भैया बहिनों ने रूचिपूर्वक कहानियों को लिखते हुए कहानियाँ प्रस्तुत की।

तृतीय सत्र में श्री द्रोण जी गुप्ता अध्यक्ष स.शि.म. की अध्यक्षता में कहानियों की समीक्षात्मक चर्चा करते हुए डॉ. विकास देव ने भैया बहिनों को कहानियों के लिखने एवं लेखन शैली को प्रोत्साहित करते हुए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

अंत में संस्था के प्राचार्य श्री लक्ष्मीकांत त्रिपाठी द्वारा आभार व्यक्त करते हुए कल्याण मंत्र से कार्यशाला का समापन किया गया।

एक पेड़ माँ पुत्र समान, पेड़ लगाना काम महान

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसर कार्यवाह मा. कृष्णगोपाल जी द्वारा प्रेरित होकर फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री जयप्रकश जी ने संस्थान के २५ वर्ष पूरे होने पर २५ लाख वृक्ष लगाने का महाअभियान लिया है। ११००० युवा कार्यकर्त्ताओं द्वारा ११ राज्यों के १५०० गाँवों में क्रियान्वयन के संकल्प वाले ऐसे अभियान अन्य संस्थाओं के लिए भी प्रेरणास्पद है।

कहानी लेखन कार्यशाला सम्पन्न

बड़वानी। दिनांक ९ सितम्बर २०१६ को बड़वानी नगर के ८४ बच्चों ने कहानी लेखन कला की बारीकियाँ सीखीं। बड़वानी के ६ विद्यालयों से आए कहानी लेखन में रुचि रखने वाले बच्चों को पूरे दिवस की कार्यशाला में विधा प्रशिक्षक डॉ. विकास दवे का स्नेहिल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर प्रख्यात रचनाकार डॉ. मधुसूदन चौबे मुख्य अतिथि एवं श्री प्रमोद कुमार मिश्र 'प्रबोध' अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। आभार श्री लक्ष्मण परिहार ने माना। यह जानकारी कार्यशाला संयोजक श्री मुकेश पाटिल ने दी। ग्रामीण विद्यालय अरनियां कलां में वहीं के कुछ विद्यालयों के शिशु कक्षाओं में पढाने वाले शिक्षकों की कथा-कथन कार्यशाला सम्पन्न हुई।

शिशु कक्षा शिक्षण में कथा कथन के महत्व पर कार्यशाला

अरनियां कला। शुजालपुर के निकट एक ग्रामीण विद्यालय अरनियां कलां में वहीं के कुछ विद्यालयों के शिशु कक्षाओं में पढाने वाले शिक्षकों की कथा-कथन कार्यशाला सम्पन्न हुई। दिनांक २२ अगस्त २०१६ को बाल साहित्य सृजनपीठ, इन्दौर के इस आयोजन में प्रशिक्षक के रूप में डॉ. विकास दवे पूरे समय उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का अलख जगाने वाले श्री जुगल किशोर श्रोत्रिय रहे। अध्यक्षता श्री अखिलेश मिश्रा (संगठन मंत्री ग्राम भारती शिक्षण समिति, मालवा प्रांत) ने की।

चुटकुले

विष्णुप्रसाद चौहान,
ढाबलाखुर्द

महिला- भैया सही सही दाम लगाओ हम हमेशा आपकी दुकान से ही सामान लेते हैं।
दुकानदार- भगवान से डरो बहन जी, अभी कल ही नई दुकान खोली है।

****

ससुर - मेरी बेटी का ख्याल रखना, इसकी आँखों में आंसू न आने पाएं।
दामाद - ठीक है, प्याज मैं काट दूंगा पर बर्तन इसे ही धोने होंगे।

****

डाक्टर- कल रात को क्या खाया था?
मरीज - बर्गर, पिज्जा और केक...
डाक्टर - देखो ये फेसबुक नहीं है, सच बताओ...
मरीज- जी लौकी...

कविता बनाइए (२३)

की चयनित रचना

आओ खेलें खेल, खेल कर मेल बढ़ाएं
मिट्टी लगे बदन पर, मन निर्मल हो जाएं

• सुहासिनी कुंभकार, नीमच (म.प्र.)

एक हवाई जहाज तूफान में फंस गया। सोनू उसका कप्तान था।
सोनू (यात्रियों से) किसी को तूफान से बचने की प्रार्थना आती है।
एक यात्री खुश होकर बोला- आती है।
सोनू- ठीक है, तुम अपने लिए प्रार्थना करो, क्योंकि एक पैराशूट कम है।

****

माँ (पुत्र से) - उठ जा बेटा... देख सूरज निकल आया है।
पुत्र - माँ वह सोता भी तो मुझसे पहले है।

****

मरीज (डाक्टर से)- डॉक्टर साहब! ये दवा मुझे पूरे शहर में नहीं मिली।
डाक्टर- मिलेगी भी नहीं, मैं दवा लिखना भूल ही गया हूँ। ये तो मेरे हस्ताक्षर हैं।

****

मोहन (अपने मित्र सोहन से) - मैंने अपने बेटे का नाम अमरीका रख दिया है।
सोहन - वह क्यों?
मोहन- क्योंकि मैं दुनिया को बताना चाहता हूं कि मैं अमरीका का बाप हूं।

****

माता-पिता का अपने बच्चे के लिए सबसे पसंदीदा जवाब - ''दिमाग तो बहुत है इसका, बस पढाई पे ध्यान नहीं देता।''

****

एक बच्चा ढेर सारी चाकलेट खा रहा था। पास में खड़ा आदमी बोला- इतनी चाकलेट खाना अच्छी बात नहीं।''
बच्चा- पर मेरे दादाजी ९५ साल तक जिए।
आदमी - तो क्या रोज चालकेट खाते थे?
बच्चा- नहीं अपने काम से काम रखते थे।

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७** वर्ष २०१६ में प्रकाशित **बाल कहानी की पुस्तक हेतु** प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियां मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार के नाम से **४०,संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)** पर **३०, जनवरी २०१७** तक प्राप्त होना चाहिए। **पुरस्कार स्वरूप ५०००/- की राशि** प्रदान की जाती है।

बाल साहित्यकारों से प्रविष्टि स्वरूप कृतियां सादर आमंत्रित हैं।

- संपादक

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार की स्थापना की गई है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष देवपुत्र द्वारा निर्धारित विषय पर, निर्धारित विधा में रचित सर्वश्रेष्ठ, मौलिक, अप्रकाशित स्वरचित रचनाओं पर प्रदान किए जाएंगे। वर्ष २०१६ के लिए यह पुरस्कार ऋतुवर्णन विषय पर रचित श्रेष्ठ काव्य रचनाओं पर प्रदान किए जाएंगे।

अपना देश छः ऋतुओं वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म से सम्पन्न देश है बाल साहित्य में प्रायः वर्षा, ग्रीष्म, बसन्त पर रचनाएं मिलती हैं शरद, शिशिर, हेमन्त को शीत वर्णन में ही समाहित माना जाता है। इन छहों ऋतुओं पर भी पृथक-पृथक रचनाएं हो सकती हैं। प्रविष्टियां सादर आमंत्रित हैं। इच्छुक रचनाकार अपनी प्रविष्टि ३० जनवरी २०१७ तक अवश्य भेज दें। प्रत्येक प्रविष्टि के साथ रचना के मौलिक अप्रकाशित एवं स्वरचित होने का पत्र स्वयं सत्यापित प्रमाण पत्र के रूप में साथ भेजना अनिवार्य है- इस प्रमाण पत्र की सत्यता का पूरा उत्तरदायित्व रचनाकार का रहेगा। रचनाएं हिन्दी भाषा में रचित हो। अनूदित रचनाएं स्वीकार्य नहीं है।

रचनाकार के लिए कोई आयु बंधन नहीं है। श्रेष्ठतम पांच रचनाओं का चयन देवपुत्र द्वारा मनोनीत विधा एवं विषय के मर्मज्ञ निर्णायकों द्वारा किया जाएगा। जिनका निर्णय सर्वमान्य होगा।

पुरस्कृत रचनाओं को क्रमशः १५००/- १२००/- ११००/- एवं ५००-५०० रु. के दो प्रोत्साहन पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा।

विशेष - पुरस्कृत एवं अन्य प्रविष्टियाँ में से चयनित रचनाओं का संपादित स्वतंत्र संकलन या देवपुत्र में प्रकाशन की भी योजना है। अतः प्राप्त रचनाओं के प्रकाशनार्थ उपयोग का अधिकार देवपुत्र के पास सुरक्षित रहेगा। प्रकाशित संकलन/अंक की एक प्रति सम्मिलित रचनाकारों को सादर प्रेषित की जाएगी।

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

• संस्थानों/विद्यालयों के लिए १० से अधिक अंक की सामूहिक सदस्यता हेतु वार्षिक सदस्यता	११०/-
• एक अंक	१५/-
• वार्षिक सदस्यता	१५०/-
• त्रैवार्षिक सदस्यता	४००/-
• पंचवार्षिक सदस्यता	६००/-
• आजीवन सदस्यता	११००/-

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना